मुजरिम हुवा मैं पेशे-खुदा, फिर किसीको क्या॥
उस बे-वफ़ाको कुछ तो समझकर दिया है दिल।
अच्छा किया कि हमने बुरा, फिर किसीको क्या॥
अपनी खुशीसे हम तो चले राहे-इश्क़में।
दिल खाकमें मिला तो मिला; फिर किसीको क्या
हिंदूसे कुछ ग़रज़ न मुसलमांसे कुछ ग़रज़।
सबसे जुदा है दीन मेरा, फिर किसीको क्या॥
करताहूं वस्फ़े-हुस्न तो कहते हैं नाज़से।
जोबन है हम पै नामे-खुदा; फिर किसीको क्या॥
जो है जहां में उसके है आमाल उसके साथ।
सफदर बुराहै ख्वाह भला, फिर किसीको क्या २२

ग़ज़ल सफ़दर।

किस शानसे घरमें मेरे वह आए हुए हैं।
सहमें हुए झेपे हुए शरमाए हुए हैं॥
फिर हाथ न आएगा जो लेना है तो लेलो।
अबतक दिले-बे-तावको ठहराए हुए हैं॥

झड़ी क्योंकर न अश्कोंकी लगाते ।
सुना बरसातमें सावन किसीका ॥
गरेबांके उड़ाए खूब पुर्जे ।
न आया हाथ जब दामन किसीका ॥
कुछ अपने क़त्ल होनेका नहीं ग़म ।
लहूसे भरगया दामन किसीका ॥
वहीद इतनी हवस है क़त्लके बाद ।
न छूटे हाथसे दामन किसीका ॥ ९४ ॥

ग़ज़ल वहीद ।

गुज़र था जब सरे-मदफ़न किसीका ।
चिराग़े गोरथा रोशन किसीका ॥
किसी की जान आँखैं मांगती हैं ।
लिये लेतीहै दिल चितवन किसीका ॥
शबे-वादा न मल पावों में मेंहदी ॥
नकर खूं ओ बुते-पुर-फ़न किसीका ॥
उठेंगे हश्रके दिन कब्रसे हम ॥

है सुब्ह शबे-वस्ल भी किस लुत्फ़की सोहबत।
हम छेड़पै आमदा वः शरमाए हुए हैं ॥
सर सरसे कहो जल्द चिराग आके बुझादे।
तुर्बत पै कई पर्दा-नशीं आए हुए हैं ॥
हूरो को कभी मुँह न लगाएँगे वः सफ़दर।
जो यारके बोसोंका मजा पाए हुए हैं ॥२३॥

ग़ज़ल आग़ा।

मरनेकी मांगते हैं दुआएँ ख़ुदासे हम्।
तंग आगई हैं हमसे दवा और दवासे हम् ॥
कह दो मसीहसे कि यः है दर्दे-लाइलाज।
ज़ख्मी हुए हैं यार की तेगे-अदासे हम् ॥
बाजूका ज़ोर तेग़ की हसरत निकालले ॥
डरते नहीं हैं कुछ तेरे जोरो-जफासे हम् ॥
जो कुछ कियाथा खूब सज़ा उस्की पाचुके।
अब दिल लगावेंगे न किसी बे-वफ़ासे हम् ॥
वह कहते हैं कि हमको भी उल्फत तो है मगर

मर्द जो कहते हैं मुँहसे उसे कर देते हैं।
पाँव डिगते नहीं हम बात पै सर देते हैं॥
हज़रते-इश्क़ नहीं कामसे ख़ाली अपने।
आह में दर्द तो नाले में असर देते हैं॥
पारसाई में लगा देते हैं आख़िर धब्बा।
दाग़ उश्शाक़को यह रश्के-क़मर देते हैं॥
हम दुआ उनको दिया करते हैं चुपके चुपके।
गालियाँ भी सरे महफ़िल वः अगर देते हैं॥
क़हर है बस यः अदा आपकी साक़ी बनकर।
किस तरफ़ आँख है और जाम किधर देते हैं॥
वस्लकी रातमें किस तरहसे हसरत निकले।
सुब्ह तो बातोंही बातों में वह कर देते हैं॥
देखिये पारहो किस तरहसे बेड़ा अपना।
मुझको तूफ़ांकी ख़बर दीदए-तर देते हैं॥
इस रिहाईसे तो मरना है क़फ़स में बेहतर।
छोड़ते हैं जिसे पर उस्के कतर देते हैं॥
डूबजाए न कहीं दिलको बचाना अपने।

आग़ासे बोलते नहींशर्मों-हयासे हम॥३४॥

गज़ल ।

क्यों दीन-नाथ मुझपै तुम्हारी दया नहीं ।
आश्रित तेरा नहीं हूं कि तेरी प्रजा नहीं ॥
मेरे तो नाथ कोई तुम्हारे सिवा नहीं ।
माता नहीं है बन्धु नहीं है पिता नहीं ॥
माना कि मेरे पाप बहुत हैं पै हे प्रभू ।
कुछ उनसे न्यूनतर तो तुम्हारी दया नहीं॥
करुणा करोगे क्या मेरे आंसूही देखकर ।
जीका भी मेरे दुःख तो तुमसे छिपा नहीं ॥
तुमभी शरण न दोगे तो जाऊंगा मैं कहां ।
अच्छा हूं या बुरा हूं किसी औरका नहीं ३५

गज़ल आग़ा ।

ए जाने जहां ! आप किधर देखरहे हैं ।
दिल ताक रहे हैं कि जिगर देख रहे हैं ॥
कौनैनको हम जेरो-ज़बर देखरहे हैं ।

नई बेदादो-ताज़ा जुल्म है सैयाद गुलचीं का ।
जब आई फ़स्ले-गुल-तब-बुल्बुलों के पर कतरतेहैं
हज़ारों जानसे जाते हैं यह कैसी मसीहाई ।
मसीहाकुछखबर भी है? तेरे बीमार मरतेहैं १८३

गज़ल रिन्दा ।

फ़िराके यारमें दिन ज़िन्दगीके अपने भरते हैं ।
सिसकते हैं पड़े आशिक़ न जीते हैं न मरते हैं ॥
गुमाने-जुल्फ़से नज्ज़ारए-सम्बुल नहीं करते ।
हमें काटा है जबसे सांपने रस्सीसे डरते हैं ॥
लगाहै रोग अब तो इश्क़का इस जाने-मुज़्तरको।
जो होगी ज़िन्दगी बचजायगे बिल्फ़ेल मरते हैं॥
बलाहै आशिक़ों के हक़में माशूक़ों की आरायश।
यहां तो दिल बिखरताहै वहां गेसू सँवरतेहैं १८४

गज़ल अमीर मीनाई ।

जफ़ाएं झेलकर तासीरे-उल्फ़त हम दिखाते हैं।

तूफ़ां तेरे एदीदए—तर देखरहे हैं ॥
उस शोफ़ सितम—गार के जोबन पै नज़र है।
हम नख्ले—तमन्नाके समर देखरहे हैं ॥
कुछवख़ियाकीख्वाहिशहैनमरहमकीतलबहै।
क्यों लोग मेरा ज़ख्मे—जिगर देखरहे हैं ॥
आग़ा कहीं छिपताहै मुहब्बतका असरभी।
मुद्दतसे चश्मको तेरी तर देखरहे हैं ॥ २६ ॥

गज़ल दाग़।

आई हुई आशिक़ की तबीअत नहीं जाती।
आती है तो आकर यः क़यामत नहीं जाती ॥
अल्लाहसे महशरमें कहूंगा तेरे आगे।
मजबूर हूं मैं इस्की मोहब्बत नहीं जाती ॥
सर जाता है सरसे तेरा सौदा नहीं जाता।
दिल जाताहै दिलसे तेरीउल्फ़त नहीं जाती ॥
उठ उठ के वः सो जाते हैं हरबार शबेःवस्ल।
यह नींद-भरी-आंखोंकीग़फ़लत नहीं जाती॥

ए दग़ा बुरा मान न तू उस्के कहेका ।
माशूककी गालीसेकुछइज्जतनहीं जाती॥ ३७॥

गज़ल अमानत ।

जिस दिलको हुई आपकी उल्फ़त नहीं जाती ।
आई हुई आशिक़ की तबीयत नहीं जाती ॥
पीरीमें भी चेहरे पै हसीनोंके नमक है ।
मुरझाए-हुएफूल की रंगत नहीं जाती ॥
टूटा हुआ रिश्ता कभी जुड़ते नहीं देखा ।
पड़जाती है दिलमें जो कुदूरत नहीं जाती ॥
बोसे जो शकर-लब के तेरे शबको लियेथे ।
वह लुत्फ़ ज़बां पर है कि लज्ज़त नहीं जाती ॥
किस रश्के–परीने मुझे दीवाना बनाया ।
क्यों हज़्रते-दिल आपसे वहशत नहीं जाती ॥
दिल पहलूमें जलताही रहा करता है हरदम् ।
बढ़जाती है जब सोजिशे-फ़ुर्क़त नहीं जाती३८

गज़ल ।

कहनेमें नहीं हैं वः हमारे कई दिनसे ।

फिरते हैं उन्हैं गैर उभारे कई दिनसे ॥
आखि़र मेरी आहोंने असर अपने दिखाए ।
घबराए-हुए फिरते हैं प्यारे कई दिनसे ॥
इस दर्जः मेरे दाग़े-जिगर हैं शरर-अफ़शां ।
निकले नहीं अफ़लाक पै तारे कई दिनसे ॥
ख़ंजर मेरे सीने पै चला करते हैं पैहम् ।
ग़ैरोंसे जो होते हैं इशारे कई दिनसे ॥ २९ ॥

गज़ल अमानत ।

ए यार ! न निकला करो बे-साख़्ता घरसे ।
परहेज़ तुम्हें चाहिये आसेबे नज़रसे ॥
नक़्शा यः कहां पाया है चितवन यः कहां है ।
रुख़को तेरे तश्बीह नहीं शम्शो-क़मरसे ॥
काकुलसे तेरीं ख़ल्क़का दम बन्द हुआ है ॥
चलता नहीं अब रास्ता इस सांपके डरसे ।
वहशतने मकानोंके बखेड़ेसे छुड़ाया ।
आराम है सहरामें ज़ियादा मुझे घरसे ॥

है वस्क़-की-शब आज तो कम्बख़्त न बोले।
इतना तो कोई कहदे ज़रा मुर्ग़-सहरसे ॥
जिन्नो-मलिको-हूर किसीकोभी अमानत।
बेहतर नहीं ख़ालिक़ने बनाया है बशरसे॥४०

गज़ल श्याम।

शोख़ीमें नाज़ नाज़में शोख़ी बलाकी है।
अन्दाज़में अदामें अदा किस अदाकी है॥
शोख़ीका हुक्म है कि लड़े आँख बज़्ममें।
नीचीरहे निगाह इजाज़त हयाकी है॥
त्योरी चढ़ाके जानली हँस हँसके दिललिया।
उनकी हर-एक अदामें अदाकिस अदाकीहै।
भरताहूं आहे-सर्द तो कहते हैं होके गर्म।
लो यह भी जानदेते हैं कुदरत ख़ुदाकी है॥
लेतेहैं काम जज़्बए-ख़ातिरसे काम हम।
क़ासिदकी आरज़ू न तमन्ना सबाकी है॥४१॥

वज़न—(४)

"मफ़ऊल मुफ़ाइल मुफ़ाइल मुफ़ाइल"

गज़ल आग़ा ।

(ध्वनि ईमनकी माँझ ताल दादरा)

मजमा यः रहेगा सरे-बाज़ार कहांतक ।
घेरे रहेंगे यारको अग़यार कहांतक ॥
कनआंमें न पाया तो तुम्हें मिस्रमें ढूँढा ।
पहुँचे हैं तुम्हारे भी ख़रीदार कहांतक ॥
सर पर जो पड़ी पाँवके नीचे उतर आई ।
अब काटकरेगी तेरी तलवार कहांतक ॥
मैं ज़ब्तका खू-गर हूं कभी उफ़ न करूंगा ।
पहुँचाएगा ज़ालिम मुझे आज़ार कहांतक ॥
वह तालिबे-दीदार है दीदार दिखादो ।
रोयाकरे आग़ा पसे-दीवार कहांतक ॥ ४२ ॥

गज़ल अमानत ।

दिखलाएगा दीदार न ए-यार कहांतक ।

तड़पाएगा ओ तुर्क सितमगार कहांतक ॥
क़िस्मतमें अज़ल से है मेरी सहरा-नवरदी ॥
छेदेंगे न तलवोंमें सरे-ख़ार कहांतक ॥
इस क़ैदे-क़फ़स से हो रिहाई नहीं मुमकिन्।
टकराएगा सर मुर्गे़-गिरफ्तार कहांतक ॥
नज़रोंसे नज़र लड़ती है हो जाते हैं बदमस्त ।
आशिक़ रहैं इन आँखोंके हुशियार कहांतक॥
आ बहरे-मदावा तू अब एरश्के-मसीहा ।
फ़ुर्क़त में **अमानत** रहै बीमार कहांतक॥४३

गज़ल हम्द—लखनवी ।

क्या आज नई बात हुई तुम इधर आए ।
उश्शाक़में गुल है किधर आए किधर आए॥
दिल ताकें लो तुम शौक़से तीरे-नजर आए ॥
हां हां इधर आए इधर आए इधर आए ।
तुम मिलनेको ईद ए-मेरे-रश्के-क़मर आए।
अल्लाह किधर चांद हुआ तुम इधर आए ॥

आए तो सुनातेहुए यह मेरे घर आए ।
जाना था कहां भूलके रस्ता किधर आए ॥
अग़यारके घरका तो नहीं होगया धोखा ।
क्या भूलगए राह इधर तुम किधर आए ॥
माना कशिशे-दिल है सिवाग़ैरोंकी मुझसे ।
इतना तो बतादो कितुमअबकिस्केघरआए॥
इस बातपै तासीर दिखाएँगे फ़ुग़ांकी ।
कहते हो "नहीं आएँगे" अच्छा अगरआये ॥
गुस्सेमें जो वह महरे-लक़ा उठके खड़ा हो ।
खुरशेदे क़यामत क़दे-आदम नज़रआए ॥
अश्कोंने किया कैफ़िअ़ते-क़ल्बसे आगाह ।
घरहीके तो भेदी तुम्हें देने ख़बर आए ॥
बेफ़ायदा हम खूने-जिगर पीके करें क्या ।
एहमद ! कोईकामभी जबयहहुनरआये ४४

गज़ल दाग ।

जब उस्केमुक़ाबिल मेरेदागे़--जिगरआए ।

खुरशेदे-क़यामतको भी तारे नज़र आए ॥
कुछ रंजका मज़कूर न ए नामा-बर आए ।
ऐसा न हो इलज़ाम उधरका इधर आए ॥
हूरों से मिलालूं मैं किसी शोख़की सूरत ।
दमभरको अगर चर्ख़ से जन्नत उतर आए ॥
रहरहके वः पछताएँ किक्यों उसको सताया ।
थमथमके मेरी आहमें या-रब असरआए ॥
ऐंदाग मिला गैरसे क्या बज़्ममें तुमको ।
जब दोस्त कहेआपकेदुश्मन किधरआए॥४५

गज़ल रासिख-देहलवी ।

शम्शीर लियेगरवः बुते-फितना-गरआए ।
मुश्ताके-शहादत का हथेलीपै सर आए ।
तुर्बतपै खडे रोते हैं क्यों अपने पराये ॥
हमअपनेवतनआयेहैंहमअपनेघरआए ॥
रुकरुकके चलैतेग़ किथमथमकेखिँचेजान ।
रहरहके मुझेजल्वए-क़ातिल नज़र आए ॥

यों आया है सब्ज़ा लबे-जाँ-बख़्शपर उनके।
ईसा की मुलाक़ातको गोया ख़िज़र आए॥
लिक्खा है जवाब उसनेयःक़ासिदमेरेख़तका॥
अल्लाह करे अबकी तुम्हारी ख़बर आए॥
इस पहलूमें वह शोख़हो उस पहलूमें हूरें।
फिर देखिये ज़ाहिदकी तबीअत किधरआए॥
चुटकीहीमें क़ातिलके अभी तीरथा रासिख।
बोले जिगरो-दिल इधर आए इधरआए॥४६

गज़ल।

अल्लाह री शोख़ी इधर आए उधर आए।
हमको तो परी-ज़ाद छलावा नज़र आए॥
आँखोंमें किया घर इधर आए इधरआए।
दिललेके सनम् चलतेही-फिरते नज़रआए॥
देखा नहींकिसकिसकोइनआंखोंकीबदौलत।
हमको तो फ़क़त एक तुम्हीं तुम नज़र आए॥
कोठेसे नज़ाकत तो उतरने नहीं देती।

तुम आंखोंसे दिलमें मेरे क्योंकर उतरआए।
जिस्के लिये बे-ताब है बिजलीकी तरहदिल।
या रब ! वः मुझे चांदसी-सूरत नज़रआए॥
हर रोज़ मज़ा दीदका लूटे निगाहे-शौक।
हर सुब्ह इलाही वही सूरत नज़र आए।
हम सैफ़-ज़बानीके देखादे अभी जौहर।
रखताहै अगर हौसला दुश्मनइधरआए४७॥

गज़ल आग़ा।

फिरताहूं नहीं दीद मुयस्सर कई दिनसे।
बरगश्तः है कुछ अपना मुकद्दर कईदिनसे॥
अब आंख चोराता है बराबर कई दिनसे।
साक़ी नहीं देता हमें साग़र कई-दिनसे॥
सूँघी जो नहीं ज़ुल्फ़े-मुअम्बर कई दिनसे।
ग़श आते हैं दिन-रातबराबर कई दिनसे॥
देखी जो नहीं सूरते-दिलबर कई दिनसे।
बेचैन है अपना दिले-मुज़्तर कई दिनसे

महताब निकलतानहीं खिजलतसे फ़लकपर।
सोते हैं जो कोठे पै वः अकसर कई दिनसे ॥
यह बांक-पन अब लाएगा आफ़त मेरे सरपर।
कज रखता है टोपीको वःकाफ़िर कई दिनसे॥
यह कहदे कोई ईसए खुद-कामसे आग़ा।
बीमार पड़ाहै तेरे दर पर कई दिनसे॥४८॥

गज़ल श्याम।

रिन्दोंकी मै-कदेमें यः हर-सू पुकार है।
दे साक़िया शराब नशेका उतार है॥
क्या इसने देखली कहीं रफ्तारे यार है।
इठलाके चलरही जो नसीमे-बहार है॥
बे-गिन्ती बोसे जब लिये बोले वः नाज़से।
कैसा है यह हिसाब यः कैसा शुमार है।
अँगड़ाइयां न रोकिये हम जानते हैं सब॥
यह रातभरकी बादा-कशीका खुमार है॥
ठोकराके मेरी क़ब्रको कहते हैं नाज़से॥

खिंचता है दिल इधरको यः किसका मज़ार है।
इन्सांको चाहिये कि सदा नेकियां करे॥
दो दिनकी जिन्दगीका नहीं एतिबार है॥
ग़ैरोंके पास बैठके कहते हैं नाज़से।
देखो तो श्याम आज बहुत बेक़रार है॥४९॥

वज़न (५)

"मुफ़ाएलुन् फ़एलातुन् मुफ़ाएलुन् फ़ेलुन्"

गज़ल सफ़दर।

(ध्वनि ईमनकी माँझ ताल दादरा)

फ़िराक़-यार में झेलीं मुसीबतें क्या क्या।
गुज़र गईं मेरे सरपर क़यामतें क्या क्या॥
लब उन्के लब पै रहा सीना उन्के सीनेपर।
उठाईं हमने शबे-वस्ल लज्ज़तें क्या क्या॥
उछलते डूबते बहते तमाम उम्र गई।
मुहीते-इश्क़में खींची मशक्क़तें क्या क्या॥

लहद पै फ़ातहा-ख्वानीकौ भी न आए कभी।
जो लोग रखतेथे हमसे मुहब्बतें क्या क्या ॥
जो देखी गोरमें तनहाइए-मकाँ सफ़दर।
तो यादआगईं यारोंकी सोहबतें क्याक्या९०

ग़ज़ल।

तमाम उम्र तरसते रहे सखुनके लिये।
न कहसके कभी एक बोसए-दहनकेलिये ॥
यःपेचो-ताब मेरे दिल का साफ़ कहता है।
उदूने बोसे तेरी ज़ुल्फे-पुर शिकनके लिये ॥
न फूलैं गुल कभी रंगीनिए-दो-राज़ा पर।
सदा बहार रही है कहां चमन के लिये ॥
अदमसे ढूँढके लाएहैं हम यः दो तस्बीह।
नफ़ी कमर के लिये और ला दहनके लिये
तुम्हारी ज़ुल्फके सौदे में मिटगए लाखों।
कुए हज़ारोंने झांके चहे-ज़कन के लिये ९१॥

वज़न (६)

"फ़ऊलुन् फ़ऊलुन् फ़ऊलुन् फ़ऊल"

गज़ल सफ़्दर ।

(ध्वनि परज ताल होली)

मैं जबतक मुक़ीमे-दरे-यार था ।
यः बामे-फ़लक ज़ेरे-दीवार था ॥
किसीसे न जबतक सरोकार था ।
बड़े चैनमें यह दिले-ज़ार था ॥
जबानो न हसरतसे देखो मुझे ।
कभी मैं भी आईना-रुख़सार था ॥
वः कांधा जनाज़े को दें क्या अजब ।
कि मैंभी कभी नाज़-बर्दार था ॥
कभी हमने सफ़्दरके देखे थे रंग ।
जवां सैकड़ोंमें नमूदार था ॥ ८२ ॥

गज़ल ।

अदाओंसे दिलको मसलते हुए ।

चले आवो एक दिन टहलते हुए ॥
वः दिललेके चुपकेसे चलते हुए।
यहां रहगए हाथ मलते हुए ॥
यः कूचा बुतोंका है ऐ शेखजी!
ज़रा जाइयेगा सँभलते हुए ॥
क़यामत क़यामतमें बर्पा हुई।
गए जब वः तेवर बदलते हुए ॥ ९२ ॥

वज़न-(७)

"मुफाईलुन् मुफ़ाईलुन् मुफ़ाई"

गज़ल वहीद।

(ध्वनि झिंझोटी ताल गजल)

जो याद आया रुखे़-रोशन किसीका।
मुनौवर होगया मस्कन् किसीका ॥
जुवानीका मज़ा दिखला रहा है।
वः गदराया हुवा जोबन किसीका ॥

पकड़कर हाथ में दामन किसीका ॥
वहीद अब हम तो जाते हैं यहांसे ।
रहे फूलाहुआ गुलशन् किसीका॥५८॥

गज़ल आग़ा ।

मिटेगी यारसे तक़रार क्योंकर ।
बनेगा दुश्मने-जां यार क्योंकर ॥
टलेगा हिज्र का आज़ार क्योंकर ।
जियेगा आपका बीमार क्योंकर ॥
मैं उनको रास्तेमें घूरता हूं ।
वः धमकाएं सरे-बाज़ार क्योंकर ॥
सफ़र दरपेश है मुल्के-अदमका ।
कटेगी मंजिले-दुशवार क्योंकर ॥
भला चंगा अभी फिरताया आग़ा ।
मौहब्बत का हुवा आजार क्योंकर ॥५९॥

गज़ल वास्वी ।

तलाशे-यारमें है मुब्तिला दिल ।

लिये फिरता है मुझको जा-बजा दिल ॥
अगर होता न ज़ुल्फ़ोंपर फ़िदा दिल ।
तो क्यों होता बलामें मुब्तिला दिल ॥
मैं उस्के हिज्रमें रोता हूं दिनरात ।
कि जिसने हँसते हँसते लेलिया दिल ॥
नहीं इस दिलमें जा दाग़ोंसे ख़ाली ।
इलाही ! हो इनायत दूसरा दिल ॥
न समझा वास्ती मैं सोज़े-ग़मसे ।
कि शोला है मेरे पहलूमें या दिल ॥८७॥

ग़ज़ल सफ़दर।

लिये फिरता है मुझको जा बजा दिल ।
मेरा बेचैन मेरा चुलबुला दिल ॥
मिलाया ख़ाकमें क्यों उस्को तूने ।
बहुत नाज़ों का पाला था मेरा दिल ॥
हज़ारों हसरतोंका खून होगा ।
अरे ज़ालिम न मिट्टीमें मिला दिल ॥

उठाता क्यों बुतों के नाज़ बेजा ।
अगर होता मेरे बसमें मेरा दिल ॥
अदाओ-नाज़े-जानां की दोहाई ।
गया दिल हाथसे मेरे गया दिल ॥
गलीसे उन्के घरतक आते आते ।
मचलकर सौजगह रह रह गया दिल ॥
खुशी हो ग़म हो कुछ हो हमने सफ़दर ।
बस अब तो एकसनमको देदिया दिल ५८

ग़ज़ल बेहोश ।

रहूंगा मरकेभी कूये-बुतांमें ।
बनेगी क़ब्रे-बुल्बुल गुलसितामें ॥
इलाही मौत आजाए तो बेहतर ।
फँसे लेकिन् न दिल ज़ुल्फ़ेःबुतांमें ॥
जलादे चर्ख़ या दुश्मन्के घरको ।
असर इतना तो हो आहो-फ़ुग़ांमें ॥
हथेली पर लिये फिरते हैं जां हम ।

उन्हें है उम्र अबतक इम्तहांमें ॥
नसीहतसे नहीं आता है वह बाज़ ।
गया बेहोश फिर कूये-बुतांमें ॥ ५९ ॥

ग़ज़ल ।

न जाऊं मरकेभी कूये-जिनांमें ।
जगह मिलजाय गर कूये-बुतांमें ॥
बहुत देखा बहुत ढूँढ़ा मेरी जां ।
नहीं है कोई भी तुमसा जहांमें ॥
हज़ारो बे-वफ़ा हैं योंतो लेकिन् ।
न देखा तुम-सा कोई भी जहांमें ॥
तुझे तो मैसे थी परहेज़ ज़ाहिद ।
यः कैसी आज लुकनत है ज़बांमें ।
मुक़ाबिल ग़ैरके वह आज़माएं ।
हमीं उतरैंगे पूरे इम्तहांमें ॥ ६० ॥

ग़ज़ल मश्कूर ।

बहुत ढूँढ़ा नहीं मिलता जहांमें ।

मकां है यारका क्या ला-मकांमें ॥
न देखा गुलको अक़सर गुल-सितांमें ।
क़फ़समें रहते अच्छा था ख़िज़ांमें ॥
जलाकर ख़ाक करदूं आसमांको ।
ग़ज़बके हैं शरर आहो फ़ुग़ांमें ॥
ख़्याले-रूय-जानां जबसे छूटा ।
अँधेरा छागया दिलके मकांमें ॥
तेरी अबरूसे बढकर आब क्या है ।
छुरीमें बांकमें तेगो-सिनांमें ॥
उदूका घर समझकर रात मश्कूर ।
चले आये थे वह मेरे मकांमें ॥ ६१ ॥

ग़ज़ल ।

असर है वह मेरी आहो-फ़ुग़ांमें ।
कि चक्कर है ज़मीनो-आसमां में ॥
हमारे इश्क़के बाइस हुवा है ।
तुम्हारे हुस्नका शोहरा जहांमें ॥

वः जातेहैं पहनकरसुर्ख़-पोशाक ।
खिलाएंगे नया-गुल बोस्तांमें ॥
उड़ा लेते हैं दिलको इक नज़रमें ।
सहर हैं चश्मे-ख़ूबाने जहांमें ॥
तुम्हीं हो मुश्तरी ज़ोहरा तुम्हीं हो ।
सितारे नामको हैं आसमांमें ॥
गया जो वक़्त फिर मिलता नहीं है ।
उलटकर तीर कब आया कमांमें ॥ ६२ ॥

ग़ज़ल ख़ुरशेद ।

मोहब्बत दिलको है ज़ुल्फ़े-दुताकी ।
रहा करती है एक उलझन बलाकी ॥
मैं आशिक़हूंलिया बोसा तो फिर क्या ।
ख़फ़ा होते हो क्यों तक़सीर क्या की ॥
मेरे हक़में है आज़ादीसे बेहतर ।
यः पाबन्दी तेरी ज़ुल्फ़े--रसाकी ॥
ख़ुदा जाने वः क्योंकर लेगया दिल ।

कि सूरततक न देखी दिल-रुबाकी ॥
बनी है अपनी आंख आईना खुरशेद।
तजल्ली देखकर उस खुद-नुमाकी ॥ ६३ ॥

गज़ल ।

मेरेही दिलमें वह मेरेही डरसे ।
छिपे बैठेहैं मेरीही नज़रसे ॥
जहांतक हो सकेगा नक्द दिलको।
बचाएंगे हसीनोंकी नज़रसे ॥
खुला जाताहै सब पर हालअपना।
हुए मजबूर हम दर्दे--जिगरसे ॥
खुदा महफूज़रक्खे हर बशरको ।
तेरी बांकी अदा तिरछी-नज़रसे॥
मज़ा उल्फ़तकाती हमने न पाया।
मोहब्बत करचुके हर—एकबशरसे॥
फिरे महरूम दीदारे—सनमसे ।
बुरी—साअत चले थे आज घरसे॥

तेरे तीरे-नज़रका वाहरे तोड़ ।
कि बैठा दिलमें जा निकला जिगरसे॥
किसीमें रंगो-बू तेरा न पाया ।
चमनमें गुल वहुत गुज़रेनज़रसे॥
दुपट्टा हटगया सरसे बडी बात ।
हयाका बोझ उतरा आज सरसे ॥
लबोंपर दुरुते--रज़का हैफ़िसाना॥
कहो तो शेख़जी आए किधरसे ॥ ६४ ॥

गज़ल श्याम ।

जुदाईकी घडी सर पर खड़ी है ।
अजब उफ्ताद वस्लतमें पडी है।
किसी दिनवस्लथा अब है जुदाई।
वःक्या साअतथी यह कैसी घडीहै ।
बला लायगी किस्के सरपै साहब।
यःचोटी किस लिये पीछे पडीहै ॥
कहां हम और कहां इश्क़ेहसीनाँ ।

मुसीबत यह नई हमपर पड़ी है ॥
गुज़रना चैनसे मुश्किल है ऐ श्याम ।
बहुत इसइश्क़ की मंज़िल कड़ी है ॥६॥

वज़न (८)

मफ़ऊल फ़ाएलात मफ़ाईल फ़ाएलुन ।

ग़ज़ल अहमदी ।

(ध्वनि ईमनकी माँझ ताल दादरा)

साक़ी के एक दौरने दीवाना करदिया ।
चक्कर दिया वः सरको कि पैमाना करदिया ।
क्या क्या नकीं इस इश्क़ने ख़ाना-ख़राबियां ।
आबाद घर जो थे उन्हें वीराना करदिया ॥
हम दिलसे कहरहेथे तुम्हारी कहानियां ॥
लोगोंने इतनी बातको अफ़साना करदिया ॥
अल्लः रे नाज़े-हुस्न कि पहँचानते नहीं ।
अपनोंको भी हुज़ूरने बेगाना करदिया ॥

कैसी नशीली आँख थी साक़ीकी अहमदी ।
जिस्की निगाहे-मस्तने दीवाना करदिया ६६॥

गज़ल आग़ा ।

गैरोंने अपना रंग जमाया तो क्या हुवा ।
नाहक़ हमारा खून बहाया तो क्या हुवा ॥
पीकर शराब रातको गैरोंके सामने ।
खुद बिगड़े और मुझको बनाया तो क्या हुवा ।
हम जाके सोए चैनसे आग़ोशे-यार में ।
तुमने न अपने साथ सुलाया तो क्या हुवा ॥
आग़ा कभी उम्मीद न रख उससे लुत्फ़की ।
इतने दिनों जो नाज़ उठाया तो क्या हुआ ६७॥

गज़ल कैफ़ ।

कन्दा करेंगे जाके यः रुस्तमकी गोर पर ।
मग़रूर आदमी न हो बाज़ूके ज़ोर पर ॥
वह देव क्या हुए वः परिज़ाद क्या हुए ।
च्यूंटी भी अब नहीं है सुलेमांकी गोर पर ॥

महशर में यह कहूंगा खुदाए-करीमसे ।
क्या क्या गुनह किये तेरी रहमतके ज़ोरपर॥
लाखों अज़ीज़ सैकड़ों अहबाब मरगए ।
ऐकैफ़ चलके रोइये किसी किसकी गोरपर ६८

गज़ल आगा ।

उम्मीद है कि आमदे फ़स्ले-बहारतक ।
बाक़ी न रहे जेबो-गरेबांमें यारतक ॥
मरमिटके अगर पहुँचेगे हम कूये यारतक ।
उम्मीद है कि फिर न उगेगा गुबारतक ॥
क़ासिदके पाँवँ कितने कबूतरकी जानक्या।
दुश्वार है सबाका गुज़र कूये-यारतक ॥
जाजाके भट्ठियों पै पिये हमने खुमके खुम ।
कैसा नशा, हमें नहीं आया खुमारतक ॥
आग़ा तुम्हारी राहमें साबित-क़दम रहा ।
खींचा न उसने आबलए-पासे खारतक॥६९॥

गज़ल आलम ।

कबतक तेरी जुदाईके सदमे उठाए दिल ।

हर रोज़के सितमकी कहां ताब लाए दिल ॥
दर-दर फिरा रहा है यःआग़ाजे-इश्क़में ।
आख़िरको देखिये मुझे क्या क्या दिखाये दिल
हँसतेहो मेरे हालपै क्या जाये-रहम है ।
इस तरह न अल्लाह किसीका फँसाए दिल॥
दीवाना कोई करता है वहशी कोई मुझे ।
सब कुछ सुनेंगे शुक्र है जो कुछ सुनाए दिल॥
लाई हैं पेंचमें वः हज़ारोंको बेगुनाह ।
फ़न्देसे ज़ुल्फ़े-यारके ख़ालिक़ बचाए दिल ॥
जो कुछ करो सितम वः सज़ावार है तुम्हें ।
क़ाबिल इसीके हम हैं यहीहै सज़ाए दिल॥
आजाय गर वः ग़ैरते-गुल सैरे-बाग़को ।
सीनेमें इस ख़ुसीसे न फूला समाए दिल ॥
बे-वजह आंख आपने आलमसे फेरली ।
ख़ूने-जिगर न आंखोंसे क्योंकर बहाए दिल७०

गज़ल ।

है रंग कब ग़ुलोंमें जो है रूये-यारमें ।

एक अन्दलीप क्या है मैं कहदूं हज़ारमें ॥
नींद आती थी न कल जिन्हें आग़ोशे-यारमें।
वह आज सो रहे हैं अकेले मज़ारमें ॥
नासह ख़ता मुआफ़ कहैं क्या बहारमें !
हम आख़्तियारमें हैं न दिल अख्तियारमें।
ज़ोरे-जुनूंमें जोफ़ने रुसवा किया मुझे ।
उलझे हुए हैं हाथ गरेबांके तारमें
तश्बीह किससे दूं बदने-ना-तवांको मैं ।
कुछभी न लाग़रीसे रहा जिस्मे-ज़ारमें ॥
कूये सनमसे देखिये आती है फिरके कब ।
अपनी नज़रके आप हैं हम इन्तिज़ारमें ॥
शामे-विशाल है कभी सुबहे-फ़िराके-यार ।
करतीहै उम्र गर्दिशे-लैलो नहारमें ॥ ७१ ॥

गज़ल वासित ।

मिस्सी की घड़ी है दुरे-दंदाने-यार में ।
मोती से क्या पिरोए हैं नीलमके तारमें ॥

आया ख़याले-रुख़ में तसौवर जो मांगका ।
पहुँचे हलबकी राहसे सीधे ततारमें ॥
सैयाद डाल दे तू रगे-गुलकी बेड़ियां ।
जोशे-जुनूं का ज़ोर है फ़स्ले-बहार में ॥
शाना-कशीए-ग़ैरपै दी हमने अमनी जां ।
कंघी के पेड़ ए जां ! उगेंगे मज़ार में ॥
बासित यक़ीन है कि कुछ अपनीभी बन पड़े
माशूक़ आशिक़ोंके जोहों अख़्तियारमें ७२॥

गज़ल अमानत ।

उल्फ़तमें तेरी कौन है जो चश्म तर नहीं ।
ग़मगीं नहीं मलूल नहीं नाला-गर नहीं ॥
हम दफ़्न हो चुके तुम्हें मुतलक़ ख़बर नहीं ।
दुनियामें आपसा कोई गाफ़िल बशर नहीं ।
ढई देके बैठते हैं दरे क़स्रे-यार पर ।
इनख़ानए-ब-दोष रक़ीबों के घर नहीं ॥
निकले कभी इधरसे कभी जापड़े उधर ।

आवारा फिर रहे हैं रक़ीबों के घर नहीं ॥
अच्छी नहीं हैं यार यः वादा-खिलाफ़ियां।
जिस्को ज़बांका पास नहीं वह बशर नहीं ॥
तकलीफ़ दी न क़त्लमें क़ातिलके हाथको।
निकला उधरसे तेग़ इधर अपना सर नहीं॥
हीला बहाना उज्र अमानत है सब फ़िज़ूल॥
लाग़रहैं क्यों जो आपको इश्क़े-कमर नहीं७३॥

गज़ल बासित।

जिस सरमें आपका न हो सौदा वः सर नहीं।
वह दिल नहीं जो आपके मद्दे-नज़र नहीं ॥
शोहरा तुम्हारे हुस्नका घर घर अगर्चि है।
चर्चा हमारे इश्शक़का किस-जा किधर नहीं॥
अहले-दवल हैं जो नहीं उनमें करमकी बू ॥
जो हैं करीम हाथ में कुछ उनके ज़र नहीं ॥
सौ बार उस करीम की रहमत पै हैं निसार।
हम में सिवाय ऐब के कोई हुनर नहीं ॥

शाहा ! मुझे मदीने में जल्दी बुलाइये ।
बासितका अब तो हिन्दमें होता गुज़र नहीं

ग़ज़ल शंकर ।

अब नाम ओ-पयाम यहां नामा-बर नहीं ।
वह दिल नहीं दिमाग़ नहीं वह जिगर नहीं॥
उल्फतके बाग़में यही देखा है आजतक ।
फूला शजर नहीं कभी आया समर नहीं ॥
भूले हुए जहांमें फिरे कू-ब-कू वले ।
करना है जो सफ़र तुम्हें उस्की ख़बर नहीं ॥
इश्के-बुतांमें मर-मिटे यादे-खुदा न की ।
दुनियांमें आपसा कोई ग़ाफ़िल बशर नहीं ॥
हो रहम् तबीअतमें ख़ुदाकी हो बन्दगी ।
शंकर उसे किसीका भी ख़ौफ़ो-ख़तरनहीं७८

ग़ज़ल आग़ा ।

शायर न उस्को कहिये जो शीरीं-बयां नहो ।
किस काम का कलाम जो लुत्फे-बयां नहो ॥

क्यों दिल जलोंके लबपै हमेशा फ़ुग़ांनहो।
मुम्किन नहीं कि आग लगे और धुवां न हो॥
तू मेहरबान होतो ज़माना हो मेहरबां।
तूहो अगर खफ़ा तो कोई मेहरबाँ न हो॥
मौजूद आइना है सिकन्दर का आजतक।
यकताई का हुजूर के दिलमें गुमां न हो॥
फूला-फला रहे चमने-शेरो-शायरी।
आग़ा हमारे बाग़में दख़ले खिजां न हो॥७६॥

गज़ल आग़ा।

क्योंकर हवाए-बागे जहां दिल-पसन्द हो।
जिस दिलः जलेको कूचए-क़ातिल पसन्दहो॥
मक्तल में ज़िबह करके मेरीजान छोड़ दो।
गर तुमको बकेरारिए-बिस्मिल पसन्द हो॥
जो आपकी रजा वः है आशिक़की आरजू।
कीजे कबाब शौक़से गर दिल पसन्द हो॥
आसां नहीं कमरको तेरी बालबाँधना।

वह इस गिरहको खोले जो मुश्किल-पसंदहो॥
आग़ा गलेको काटिये बज़्मे-निगारमें।
वह गुल खिलाइये कि जो महफ़िल पसंदहो७७

गज़ल आग़ा।

बासेका नील आरिज़े-जानां से दूरहो।
धब्बा खुदा करे महे-ताबां से दूरहो॥
हिरसो-हवा गुरूरो-तकब्बुर निफ़ाको-कुफ़्र।
हिन्दू से दूर हो न मुसल्मां से दूर हो॥
वह पांव क्या जो राहे-रज़ामें न चलसके।
किस कामका वः हाथ जो एहसांसे दूर हो॥
तारीफ़ आपके लबो-दन्दां की गर लिखूं।
मोती अदनसे लाल बदख्शां से दूर हो॥
सर्कार से जुनूं की हमें मिलगई सनद।
मजनूं से कहदो दश्तो-बियाबांसे दूर हो॥
ए आहो-नालाख़ाक न तुमने असर किया।
क्योंकर ग़ुबार ख़ातिरे-जानां से दूर हो॥

आग़ा यः इन्तिज़ाम रहे फ़िक्रे-शेरमें।
मज़मून ग़ैरका मेरे दीवांसे दूरहो ॥७८॥

ग़ज़ल शेख़।

ज़ाहिद! बड़ा मज़ाहै अगर यों इजाब हो।
दोज़ख़में पाँव हाथमें जामे-शराब हो॥
जामे-शराब तूने दिया अपने हाथसे।
ज़ाहिद ख़ुदा करे तुझे दूना सवाब हो॥
कड़वी दवा मरीज़को ज्यादा मुफ़ीद है।
कुछ डर नहीं शराबसे गर मुँहँ ख़राबहो॥
बोसा जो मैंने मांगा तो झुँझलाके यह कहा।
माक़ूल हो सवाल तो इस्का जवाब हो॥
जाता तो है यः महफ़िले-रिन्दामें वाज़को।
ऐसा न हो कि शेख़की मिट्टी ख़राब हो॥

गजल बासित।

मन्नत यः हो रही है कि उनका सवाब हो।
नख़्ले-मुराद देखिये कब बार-याब हो॥

लग जाइये गलेसे यः दिल शाद कीजिये ।
छुट जाऊं मैं इज़ाबसे तुमको सवाब हो ॥
मलकर मिसी वः पान भी खालें मगरहै डर।
लश्कर न गोरों कालोंका लड़कर ख़राब हो॥
करना है वस्फ़आरिज़े-गुल रंग यारका ।
कुश्तीके वास्ते हमें अर्क़े-गुलाब हो ॥
बासित परी-वशोंके तसौवरमें रातको ।
सोएं जो झोंपडेमें तो महलोंका ख्वाबहो८०॥

गज़ल ।

पाज़ेबकी सदा वः तेरी फ़ित्ना-ज़ा हुई ।
मुर्दे भी कह उठे क़यामत ब-पा हुई ॥
सारा ज़माना तुमको मसीहा कहा करे ।
मेरे तो दर्दे-दिलकी न तुमसे दवाहुई ॥
दरिया-दिली दिखाई है साक़ीने अपनी आज।
हमकोभी एक मै की पियाली अता हुई ॥
तलवार लाखबार चली कुछ नहीं हुवा ।
तुम दोकदम चले तो क़यामत ब-पा हुई ८१

गज़ल आग़ा ।

औरोंसे हँसिये बोलिये दिल शाद कीजिये ।
भूलेसेभी कभी न मुझे याद कीजिये ॥
अच्छा किया जो कहलिया मुझकोबुरा भला।
जो कुछ हो और दिलमें वः इरशाद कीजिये॥
साहब ग़रीब-ख़ानमें तशरीफ़ लाइये ।
वीरानाको मेरे क़भी आबाद कीजिये ॥
लिल्लाह अपने दिलसे कुदूरत मिटाइये ।
मिट्टी न मुझ ग़रीबकी बर्बाद कीजिये ॥
जोबनको इस तरहसे न साहब लुटाइये ।
बर्बाद यों न हुस्ने-खुदा-दादकीजिये ॥
आग़ा कभी न आएगा पाबन्दे-शरअ है ।
बज्मे़-शराबमें न उसे याद कीजिये ॥८२॥

गज़ल रंगीन ।

यक दिन तो आकेवस्लसे दिलशाद कीजिये।
बन्देको क़ैदे-हिज्रसे आज़ाद कीजिये ॥

ए मेहरबान वस्लका वादा भुला दिया।
एक़रार क्या कियाथा ज़रा याद कीजिये॥
हूं आशिक़े-क़दीम मेरी कदर है ज़रूर।
मेहनत न एक उम्रकी बर्बाद कीजिये॥
बे चैन दिलको करती हैं अगली वः सोहबतें।
भूले हुओंको फिरभी कभी याद कीजिये॥
आशिक़ गुनाह-गार है तक़्सीर-वार है।
जो चाहिये हुजूर वः इरशाद कीजिये॥
रक्खेगा रंजे-हिज्रसे नाशाद कबतलक।
आशिक़को अब तो बहरे-ख़ुदा याद कीजिये॥
रंगीं रियाज़े-दहरमें रंगे—वफ़ा नहीं।
दुनियांको तर्क सूरते-आज़ाद कीजिये॥८३॥

गज़ल आगा।

उम्मीद है यः अपने दिले दादगारसे।
पहलेही रंग लाएगा जोशे-बहार से॥
दागे़-जिगर नसीब हुवा हिज्र-यार से।

यक फूल लेचले चमने-रोज़गार से ॥
ग़ैरोंसे कुछगरज़ है न मतलब है यारसे ।
कुछ आरज़ू है गुलसे न मतलब हैं ख़ार से ॥
आईना लेके देखिये उतरा हुवाहै मुँह ।
आखें चढ़ी हुई हैं नशे के खुमार से ॥
वह कौनसा मलालहै किस बातकहोरंज ।
सदके तुम्हारे क्यों हो खफ़ा जां-निसारसे ॥
अल्लाह शर्म रक्खे वः आतेहैं मेरे घर ।
बिजलीका सामना है दिले-बेक़रारसे ॥
वहशतमें भी मैंने किसीकी पनाह ली ।
कोसों अलगरहा शजरे-सायादार से ॥
दुनियाए-बे-सिबित पै इन्सांको यह ग़रूर ।
क्या फ़ायदा हुबाब को ऐसे उभार से ॥
आग़ा किसीके आनेकी सुनपाई क्याख़बर।
फिरते हैं आज आप बहुत बेक़रारसे॥ ८४ ॥

ग़ज़लआगा।

दिलमेंख़यालेज़ुल्फ़ शिकन दर शिकन रहे।
क़ब्ज़ेमें शायरोंके सवादे-खुतन रहे॥
लाज़िमहै वाक़फ़ीअते-हर इल्मो-फ़न रहे।
अच्छाहै चन्द-रोज़ जो मश्क़े-सखुन रहे॥
आशिक़हुएहैं इन दिनोंयककज-कुलाहपर।
लाज़िम है अपने शेरमें भी बांक-पन रहे॥
यारबावःवक़्तआएकिदिन-रात सुब्हो-शाम।
लिपटा मेरे गलेसे वः गुल पैरहन रहे॥
दुनियामें आके भूल न जानाअदमकीराह।
आग़ा मुसाफ़िरीमें भी यादे-वतन रहे८९॥

ग़ज़ल आगा।

वह आके सब असीरोंको आज़ाद कर गए।
मुझपर जो मेहरबान हुए पर कतर गए॥
मुम्किन हुवा न वस्ल तो जांसे गुज़र गए।
जो कुछ कि हमसे होसका वह हमभीकरगए॥
पहलूमें दिलने चैन न लेने दिया हमें।

बे-ताब होके रातको फिर उनके घर गए ॥
तेरे सिवा किसीसे मुहब्बत नहीं रही ।
नज़रों पै जो चढे थे वः दिलसेउतरगए ॥
आग़ा मुक़ामें-शुक्र है बर आई आरज़ू ।
लाखों विसाले-यारकी हसरतमें मरगए८६॥

गज़ल अहमदी ।

अम्बरकी यह महक है न मुश्के-ख़ताकीहै ।
खुश्बू जो एपरी तेरी ज़ुल्फ़े-रसाकी है ॥
छिटकीहै आज क्यों यः स़रे-शाम चांदनी ।
आमद हमारे घरमें किसी महलकाकी है ॥
मुँहँसे भी बोलते नहीं अल्लःरी तम्कनत ।
बुत बनके रहगए हो यः कुदरत खुदाकीहै ॥
वल्लाह हमभी मिस्ले-ज़ुलेखा हैं बावले ।
हमको भी चाहअब किसी यूसुफ-लकाकीहै ॥
शाहोंकी क्या विसात फ़कीरोंके सामने ।
मत बोरिया समझ इसे मसनद गदाकी है ॥

सिजदा है जिस्पै मज़हबे-उश्शाक़में रवा ।
चौखटवः ए सनम तेरी दौलत-सराकी है ॥
ए अहमदी ! गदाए-दरे-मुस्तफ़ा हैं हम ।
वक़अतहमारे सामने क्या बादशाकीहै८७॥

ग़ज़ल ।

है जोकि ला-मकां वः मेरे दिलके घरमें है ।
देखा नहीं जिसे वही मेरी नज़र में है ॥
कुश्ते जो हैं हजारों तो बिस्मिल हैं सैकड़ों ।
आफ़तका काट आपकी तेगे-नज़रमें है ॥
वह आप अपने नावके-मिजगांसे पूछलें ।
हम क्यों कहें कि दर्द हमारे जिगरमें है ॥
पूछे हमारे जीसे कोई इस्के लुत्फ़को ।
कुछ कुछ जो बांक-पन तेरी नीची नज़रमेंहै॥
राज़े-रक़ीब लाख छिपाया करे हुज़ूर ।
जो दिलमें आपकेहै हमारी नज़रमेंहै ॥८८॥

वज़न—(९)

" फाएलातुन् फाएलातुन् फाएलातुन् फेलुन् "

ग़ज़ल सबा ।

(विहागरा ताल गजल)

ले गया छीनके दिल वह बुते-पुर-फ़न कैसा ।
रहगए देखके मुँह शेख़ो-बिरहमन कैसा ॥
नक्द दिल हाय चोराकर बुते-पुर-फन कैसा ।
चुपका बैठा है झुकाए हुए गर्दन कैसा ॥
दिल ही कुछ जानता है इश्के-मिज़ह जैसा है ।
आप क्या जानैं कलेजेमें है रौज़न कैसा ॥
नाले करताहूं तो शर्मा के वः फ़र्माते हैं ।
यह भी कुछ बात है चुपभी रहो शेवन कैसा ॥
सद्मए-बादे-सबा के मुतहम्मिल न हुए ।
चल बसे आप सबा छोड़के गुलशन् कैसा ८९

ग़ज़ल आग़ा ।

मौत के हाथसे ज़ाया हुए इनसां क्याक्या ।

हाय मुरझाए खिज़ांसे गुले-खन्दां क्याक्या॥
मुश्किलैं रंजों-अलममें हुईं आसां क्याक्या।
मेरी गर्दन पै हैं यारब तेरे एहसां क्याक्या॥
जाये-अश्क आँखोंसे फ़ौवारए-खूं जारी है।
रंग लाए हैं मेरे दीदए-गिरियां क्याक्या॥
होठ थर्राए तेरे गुस्से में कैसे कैसे।
लहरैं लेतारहा यह चश्मए हैवां क्याक्या॥
मरते मरते तपे-फ़ुरक़त से न सेहत पाई।
यार करते रहे इस दर्दका दरमां क्याक्या॥
आगे तक्दीर के तदबीर की क्या चलतीहै।
अक्ल पर नाज़ किया करते हैं इनसां क्याक्या।
आमद आमद है यः किस सैद-फ़िगनकी आग़ा
मेरे पहलूमें तड़पते हैं दिलो जां क्याक्या १०

ग़ज़ल अमानत।

या मेरा मज़हबे-रिन्दाना बनाया होता।
या मुझे मालिके-मैख़ाना बनाया होता॥

ज़ाहिदो-मस्तकी क्या खूब ठहरती यक-जा ।
कुर्ब मस्जिदके जो मै-खाना बनाया होता ॥
बाद-मुर्दन तो लबे यारके बोसे मिलते ।
गर मेरी खाकका पैमाना बनाया होता ॥
कैसो-फ़रहाद का मज़कूर न करता कोई ।
इश्क़का मेरे जो अफ़साना बनाया होता ॥
दश्त-पैपाई न लिखता तू मेरी क़िस्मत में ।
या मुझे वहशी व दीवाना बनाया होता ॥
जुल्फ़े-जानांहीके कुछकाम अमानत आता ।
दिले-सद-चाकको गर शाना बनायाहोता ९१

गज़ल ज़ार ।

तेरे मुखड़े के जब आईना मुक़ाबिल होगा ।
बे-मिसाली का जो दावा है वः बातिल होगा॥
कौनसा दिन वः बतादे मुझे एदिल होगा ।
कि मेरी तरह दिल उस शोख़का मायल होगा॥
नहीं मालूम तेरी आँखों में क्या जादू है ।

जिस्को तू एक नज़र देखले बिस्मिल होगा ॥
मैं वः दिवानए-उल्फ़त हूं भरी महफ़िल में ।
गर्चि मचला तो सँभलना मेरा मुश्किल होगा ॥
तेरी दरगाहमें सब इज्ज़से सर रखते हैं ।
जारहै कौन जो वह तुझसे न सायल होगा ॥

गज़ल अमानत ।

हर घड़ी का यः सितम उनका उठाएं क्योंकर ।
दिले-बेताबको पौलाद बनाएं क्यों कर ॥
नामको भी नहीं इन आँखोंमें आंसू बाक़ी ।
मर्दुमें-दीदा लगी दिलकी बुझाएं क्यों कर ॥
रोज अगयार उड़ा देते हैं खाका अपना ।
बज्में दिलदार में हम रंग जमाएं क्यों कर ॥
क्यों बरफरोख्ता होतेहो मेरी आहों पर ।
गर्म करती हैं तुम्हें सर्द हवाएं क्यों कर ॥
मे-कदा बन्दहै क्यों आज कहां है साक़ी ।
बादा-कश शोर न हर सिम्त मचाएं क्यों कर॥

शौके-नज़्ज़ारा भी है हसरते दीदार भी है।
पर्दए-चश्ममें इन सब को छिपाएं क्यों कर॥
दुख्तरे-रज़ है निहां खुम्मे-फ़लातूं की तरह।
ताक बे देखे हुए रिंद लगाएं क्यो कर॥ १३॥

गज़ल अमानत।

क़िस्सए-जौरे-शबे-हिज्र सुनाएं क्यों कर।
दाग़े-दिल ज़ख़्मे-जिगर उनको दिखाएं क्योंकर॥
ग़ैर सुरमेंकी तरह आँखमें पाए हैं जगह।
अश्कसां मुझको नजरसे न गिराएं क्योंकर॥
हर अदा जिस्की करे नावके-दिल-दोज़ का काम।
ऐसे क़ातिलसे भलाजान बचाएं क्योंकर॥
नासिहा बादा-परस्ती से हों तायब कैसे।
अपनी तक़दीर के लिक्खेको मिटाएं क्योंकर॥
सब्रकर एदिले-बेताब अमानत चन्दे।
अभी कम-सिन हैं उन्हें राहपे लाएं क्योंकर।१४॥

गज़ल दाग।

ग़ैर भी मेरी तरह भरते हैं आहें क्योंकर।

मैं भी देखूं तो पलटती हैं निगाहें क्योंकर ॥
न दिलासा न तसल्ली न तशफ्फ़ी न वफ़ा ।
दोस्ती उस बुते-बदखूसे निबा हैं क्योंकर ॥
यह चलन किसने सिखाए यःतरीक़े किसने ।
आगईं जौरो जफ़ाकी तुम्हें राहें क्योंकर ॥
चाहका नाम जो लेता हूं बिगड़ जाते हो ।
वह तरीक़ा तो बतादो तुम्हें चाहें क्योंकर ॥
दर्द-मन्दोंसे कहीं ज़ब्ते-फ़ुग़ां होता है ।
चुपके चुपके तेरे बीमार कराहें क्योंकर ॥
जेर-दीवार ज़रा झांकके तुम देखतो लो ।
ना-तवां करतेहैं दिल थामके आहें क्योंकर ॥
दाग़ वह चाहतेहैं ग़ैरको चाहो तुम भी ।
जो बुराचाहै हमारा उसे चाहें क्योंकर॥९५॥

गज़ल अहसन।

क़हर तो यह है कि साहब तुम्हें चाहें क्योंकर।
देखें मां बापकी हम गर्म-निगाहें क्योंकर ॥
तुम नचाहो तो नचाहो मगर अपनाहै यःक़ौल।

दिल जिसे चाहे भला उस्को न चाहें क्योंकर॥
हां ज़रा फिरतो वः अन्दाज दिखादो मुझको।
तुमने डालीथीं गलेमें मेरे बाहें क्योंकर॥
भोलाबनकर किसीकम-सिन से यः पूछूंगा ज़रूर
प्यार करतेहैं गले डालके बाहें क्योंकर॥
हाय बेताबिए दिल तूने बडा क़हर किया।
जीने देंगी मुझे यह शोख़-निगाहें क्योंकर १६॥

गज़ल अमानत।

राहकी उनके तसौवरने मेरे दिल होकर।
आज आई है सवारी इसी मंज़िल होकर॥
होगया हुस्न फ़िज़ूं उनका शबाब आतेही।
चौदवीं साल वः निकले-महे कामिल होकर॥
है तपिशए दिले-बेताब यः नाहक़ तेरी।
कोईभी सरको तो मिलजायगा क़ातिल होकर॥
जबसे बर्बाद किया मुझको न आए दिलमें।
वह गुज़रते नहीं उजड़ी हुई मंज़िल होकर॥

खींची है क़त्ले-अमानत को जो तेगे-अबरू।
मुँहको फिर मोड़ते हो किसलिये क़ातिल होकर

गज़ल श्याम।

जिबह करनेसे मेरे डरते हो क़ातिल होकर।
मैं क़सम खाता हूं तड़पूंगा न बिस्मिल होकर॥
गालियां हमको मिलीं गैरोंने बोसे पाए।
फ़ैसला खूब किया आपने आदिल होकर॥
पासे-मज़हब है न कुछ शर्म ख़लायक़की रही।
दीनो-दुनियासे गए आप पैमायल होकर॥
रोशनी हो शबे-तारीक़में निकलो साहब।
क्यों छिपे बैठे हो घरमें महे-कामिल होकर॥
सख्तिए-हिज्रके बाद आज हुवा वस्ल नसीब।
काम आसान हुवा श्यामका मुश्किल होकर॥

गज़ल बासित।

देखिये दिलसे निकलते हैं यः अरमां क्योंकर।
वस्लसे आपके हम होते हैं शादां क्योंकर॥

इन हसीनोंसे सदा हम दिले-नाशाद रहे ।
खुश रहा करतेथे परियोंमें सुलेमां क्योंकर ॥
किसतरह होगा परीज़ाद मेरे क़ाबू में ।
हाथ आयगी मेरे मोहरे-सुलेमां क्योंकर ॥
आपको मेरे सिवा औरोंसे उल्फ़त तो नथी ।
होगए गै़र यः फिर आपके ख्वाहां क्योंकर ॥
क्यों न बासित तेरे अशआर रहैंपुर-मजमूं ।
औरतूदुनियामेंनकहलायसखुन-दांक्योंकर ९९

गज़ल ।

दिलमें हम जलवए-खूबाने-जहां रखते हैं ॥
गो मुसल्मां हैं मगर इश्के़-बुतां रखते हैं ॥
हमको मुद्दतसे इसी बातमें हैरानी है ।
इतने दिल लेके यः दिल्दार कहां रखते हैं ॥
कै़सो-फ़रहाद थे दीवाने जो दिल दे बैठे ।
दिल परी-ज़ादोंकामुट्ठीमें यहां रखतेहैं ॥
देखनाभी नहीं मंजूर हमारा उनको ।

अब वः पहलीसी नज़र हमपै कहां रखतेहैं ॥
दमे रफ्तार मिटाते हैं मज़ारे-आशिक़ ।
बे-निशांका भी नहीं अब वः निशां रखतेहैं॥
क्यों न फूलोंको मैं आँखोंसेलगाऊं एजां ।
तेरे रुख़सारकाकुछ कुछ वः निशांरखतेहैं ॥
जुलमपर ज़ुल्म किये जाव सतालो हमको ।
ना-तवां हम हैं नहीं तावे फ़ुगां रखते हैं १००

गज़ल ।

लबे-शीरींक तसौवर जो यहां रखतेहैं ।
दिलमें पोशीदा मिठाईकी-दुकां रखते हैं ॥
हम न साक़ी न कोई पीरे-मुगां रखते हैं ।
जो नशा चढ़के न उतरे वः यहां रखते हैं ॥
ज़ुल्फे-पुर-ख़मका तेरी हम भी निशां रखतेहैं ।
देखले आहका पेचीदा-धुवां रखते हैं ॥
ऐसे बख़ुद हैं कि यह भी नहीं मालूम हमें ।
किसतरफ़ जाते हैं और पांव कहां रखतेहैं ॥

हम जो चाहें तो मज़ामींके चमन दिखलाएं।
नह्रे-जन्नतकी तरह तबए-रवां रखते हैं १०१

गज़ल आगा।

एक तर्ज़ एक बयां एक दहन रखते हैं।
एक दिल एक ज़बां एक सख़ुन रखतेहैं॥
नर्गिसी चश्म हैं गुञ्चासा दहन रखतेहैं।
सरो-क़ामतहैं कयामतका चलन रखतेहैं॥
होश इनसानोंसे उड़ते हैं परीज़ादोंके।
आदमी-ज़ाद भी परियोंका चलन रखतेहैं॥
नर्गिसी चश्ममें है बर्क़ ग़ज़ब पौशीदा।
शेरका दबदबा जङ्गलके हिरन रखतेहैं॥
सुर्खिए-लबसे मुक़ाबिल हैं मगर पत्थर हैं।
गुदगुदाहट तो नहीं लाले-यमन रखतेहैं॥
शोअ़रा तेरे दहनसे उन्हें निस्बत देलें।
न ज़बां रखते हैं गुंचे न दहन रखते हैं॥
इन हसीनोंने फिरश्तोंको झुँकाए हैं कुएं।

यह डबोनेके लिये चाहे ज़क़न रखते हैं ॥
बुत-परस्तीसे सरोकार नहीं है आग़ा ।
याद अल्लाहकी ए मुशिफ़के मनरखतेहैं॥ १०२

गज़ल हम्द ।

कहियेतो नाला करें कहियेतो फ़रयाद करें ।
सबमें मश्शाक़ हैं हम आप जो इरशादकरें ॥
चल दिले-ज़ार वहां नालओ-फ़रयादकरें ।
हाथ कानोंपै धरै वहभी ज़रायाद करें ॥
ज़लज़ला आए जोहम हिज्रमें फ़रयाद करें ।
लेउड़ें आहें फ़लक नालेजोइमदाद करें ॥
अब मेरेपास कहां दिल जो दुबारा फिरदूं ।
कहीं भूलआए नहों आप ज़रा याद करें ॥
खानए-दिलमें नहीं सब्र तो वह ख़ुद नरहें ।
हमने वीरान किया है वही आबाद करें ॥
माहूये इश्के-हक़ीक़ीमें अगर नारए-हक़ ।
दैरमें बैठके अल्लाहको बुत याद करें ॥

देखकर हम्द फड़क जाते हैं अरबाबे-सखुन ।
तेरेहर शेर पै आंखोंसे नक्यों स्वाद करें १०३

गज़ल तमन्ना ।

जब कोई ज़ुल्म निराला नई बेदाद करें ।
इन्तहांके लिये यारब वः मुझे याद करें ॥
किसलिये हज़रते-दिल शिकवए-बेदाद करें ।
सुनने वाला हो अगर कोई तो फ़रयाद करें॥
जिक्र क्या उनसे तेरा एदिले-नाशाद करें ।
होके बरहम न कहीं और वः बेदाद करें ॥
भेजे जिंदांमें उदूको न वः मेरे हमराह ।
एक को क़ैद करें एक को आज़ाद करें ॥
कोई हम्दर्द सिफ़ारिश जो मेरी करता है ।
साफ़ वह कहते हैं अल्लाहसे फ़रयाद करें ॥
हमसे हरबातमें है तर्के-वफ़ाका शिकवा ।
आपतो दिलमें जफ़ाओं को जरा याद करें॥
बे-वफ़ा कहता है उस बुत को तमन्ना आलम
आप लिल्लाह न भूलेसे उसे याद करें॥ १०४॥

ज़ुल्फ़ और रुख़को तुम्हारे जो कभी याद करें।
दिनको नाले करें और रातको फ़रयाद करें॥
वह करूं नाला कि बुतभी करें तोबातोबा।
खींचूं वह आह कि-उफ़ उफ़ सितम-ईजादकरें
ज़ब्त करते हैं वगरना तेरा दिलतो क्या है।
अर्श हिलजाय अगर दर्दसे फ़रयाद करें॥
मैं कभी जोरो-जफ़ासे नहीं घबराऊंगा।
जो सितम उनको हो मंजूर वः ईजाद करें॥
शुक्र करते हैं तहे-तेग़ भी क़ातिल तेरा।
सरभी कटजाय जो तनसे तो न फ़रयाद करें॥
हम वः साबिर हैं कि हर्गिज़ नहीं उफ़ करनेके।
जौर पर जौर वः बेदाद पै बेदाद करें॥
देखे तो भाग निकलती हैं जफ़ाएं कि वफ़ा।
हम उठातेहैं सितम वह सितम ईजादकरें १०९

गज़ल।

सोचकर आप तहे-ख़ंजरे-बेदाद करें।

कहीं ऐसा न हो फिर मुझको कभी याद करें ॥
जिस क़दर चाहते हों हमपै वः बेदाद करें ।
हम वा आशिक़ नहीं जो नालओ-फ़रयाद करें॥
ज़ब्त ऐसा करें हम लोग जिसे याद करें ।
मुँहको आजाय कलेजा तो न फरयाद करें ॥
एक फ़ितनाही जफ़ाका जो तेरी याद करें ।
हश्र तक बात न तुझसे तेरे नाशाद करें ॥
ग़ैरपर लुत्फ़ करें यादकरें शाद करें ।
और जब हमसे मिलैं आप तो बेदाद करें ॥
एक हम हैं कि सदा रहताहै उनकाही ख़याल ।
एक वह हैं कि न भूलेसे मुझे याद करें ॥
इनक़लाब ऐसा कभी मुझकोभीदिखलादेफलका।
मैं उन्हें दिलसे भुलादूं वः मुझे याद करें ॥
वाह क्या खूब यही तो हैं वफ़ाके मानी ।
आप भूलैं हमें और आपको हम याद करें ॥
भूलही जायँ हसीनों पै मचलकर आना ।
दूं मैं ऐसेको कि फिर हज़रते-दिल यादकरें १०६॥

गज़ल तहम्मुल ।

जब वः मिलते हैं मेरे होश उड़ादेते हैं ।
याद-आईहुई- बातोंको भुला देते हैं ॥
तुम रहो ज़िंदा हों कुर्बान हज़ारों उश्शाक़ ।
मरनेवाले दमे-आख़िर यः दुआ देते हैं ॥
बैठ ही जाताहै उफ़् करके जिगर थामके वह।
जिस्को उठ्ठाहुवा-जोबन वः दिखादेते हैं ॥
क्या कहैं क्या मए-गुलरंग दिखातीहै बहार।
जब वः दो जाम मुहब्बतसे पिला देते हैं ॥
कौन आशिक़ है तुम्हारा जो यः पूछे कोइ।
नामशर्माके तहम्मुल का बतादेते हैं१०७॥

गज़ल बासित ।

रुख़े-पुर-नूर जो जुल्फोंमें छिपादेते हैं ।
अब्रमें वह महे-कामिलको दबा देते हैं ॥
आप अग़यारको गाली जो सुना देते हैं।
मेरे आगे मेरी बिगड़ीको बना देते हैं ॥

कूये-जानांमें उड़ालाई मेरी ख़ाकको तू ।
ए सबा तुझको दिलो-जांसे दुआ देतेहैं ॥
जागी क़िस्मत कि वः बोसेके तलब करनेपर।
नाज़से कहने लगे ठहरो ज़रा देते हैं ॥
साफ़ ज़ाहिर है इसीसे है लड़कपन उनका।
मेरी हर बात जो ग़ैरोंको सुना देते हैं ॥
किसतरह रंजो-अलमका हो ठिकाना यहदिल।
हम तो ऐसे हैं कि रोतोंको हँसा देते हैं ॥
वासितहमनेभीकियाइश्कमेंहासिलयःकमाल
सब हँसीं दिलमें हमारे लिये जा देतेहैं१०८॥

ग़ज़ल ।

जिस तरफ़ वह निगहे—नाज़ उठा देते हैं ।
ज़ितने दिल थामके बैठे हैं दुआ देतेहैं ॥
ग़श जो आता है तो वह ज़ुल्फ़ सुँघा देतेहैं।
जो मुवाफ़िक़ है मरज़के वः दवा देतेहैं ॥
उस्की मैयत भी नहीं उठती यःदेखा हमने ।

यह हँसीं जिसको निगाहोंसे गिरा देते हैं ॥
क्या सितम है कि वः हँस हँसके मेरी तुर्बत पर।
ग़ैरके सूँघे हुए फूल चढ़ा देते हैं ॥
ग़म दिया रंजा दिया दाग़ दिया दर्द दिया।
और अब देखिये उल्फतमें वः क्या देते हैं॥
आज कुछ बिगड़े नज़र आतेहैं तेवर उनके।
देखें क्या दिलके लगानेकी सज़ा देते हैं ॥
आपही पर नहीं मौक़ूफ़ हैं कुछ मक्रो फरेब।
जितने माशूक़ हैं आशिक़को दग़ा देतेहैं॥१०९

ग़ज़ल।

इन हसीनों के सितम लुत्फ़े-वफ़ा देते हैं।
मारते कब हैं ठिकाने से लगा देते हैं ॥
जल्वए-आरिज़े रोशन वः दिखा देते हैं।
मिस्ल मूसा मुझे बेहोश बना देते हैं ॥
ख़्वाब में आके दिखा देते हैं सूरत अपनी।
यों वः सोती हुई क़िस्मत को जगा देते हैं ॥

सुबहे-महशरसे नहीं कम शबे फ़ुर्क़त अपनी ।
शामसे नालए-दिल धूम मचा देते हैं ॥
वक़्ते-बदका कोई साथी नहीं होता सच है ।
मेरे आज़ा मुझे पीरीमें दग़ा देतेहैं॥ ११० ॥

गज़ल बेदिल ।

रुखसे पर्दा जो लबे बाम उठा देते हैं ।
जल्वए-तूर वः आलमको दिखा देतेहैं ॥
हमवःमजनूं हैं कि जब फ़स्ले-बहारआतीहै।
धज्जियां दामने-सहराकी उड़ादेते हैं ॥
पड़गए दिलके एवज़ जानके लेनेदेने ।
हमभी क्या लेतेहैं और आपभी क्या देतेहैं॥
ज़ोम क्या कूवते-आज़ा पै करै कोई बशर।
यह जवां वह हैं कि पीरी में दग़ा देते हैं॥
साक़िया!खैरहो, मै-ख़ानेकी भट्टी आबाद।
मस्त दरवाज़े पै बैठे हैं दुआ देते हैं ॥
कहके 'क़ुम' ज़िंदा किये हज़रते-ईसानेमगर।

आप ठोकरहीसे मुर्दोंको जिला देते हैं ॥
हम वः हैं शौक़से सुर्मेकी तरह ए बेदिल।
आंखमें अहूले-सख़ुन रहनेको जादेते हैं॥११

गज़ल एहसान।

रुखके बदले वः मुझे आंख दिखा देते हैं।
ऐसे हुशियार हैं दीवाना बता देते हैं॥
नाज़ो-अन्दाज़ जवानी भी हैं अच्छे उस्ताद।
एक दिनमें उन्हें सौ ग़म्जे सिखा देते हैं॥
क़त्ल करके बहुत एहसान किया है उनपर।
तुम सलामत रहो कुश्ते यः दुआ देते हैं॥
क्या कहें बात ठिकानेकी परी-रू हमसे।
उनकी आदत हैकि बेपरकी उड़ा देते हैं॥
आके मैं-खानेमें हुशियार न बन ए जाहिद।
पीले हम तुझको एम-होशे-रुबा देते हैं॥
हाल रोनेका जो ख़तमें कभी लिख देता हूं।
पुर्ज़े कर करके वः दरियामें बहा देते हैं॥

हम कहे देते हैं परहेज़ही रखना एहसान ।
हज़रते-इश्क बुरा रोग लगा देते हैं ॥ ११२ ॥

गज़ल आसिफ़ ।

वस्लमें तल्ख़ भी दुश्मन मज़ा देते हैं ।
कोसने वालों को हम दिलसे दुआ देते हैं ॥
सुनके आवाज़ चले आते हैं वह घबराकर ।
मेरे नाले मेरी क़िस्मतको जगादेते हैं ॥
दिल मेरा किसने चोराया है बताएं मुझको ॥
जायचा खींचके जो नाम बतादेते हैं ॥
दिल्लगी यह भी शबे-वस्ल रहा करती है ।
हम जलादेतेहैं वह शमअ (शमा) बुझा देतेहैं ॥
वह गएदिन जो उसे कोसते थे आठपहर ।
अब तो आसिफ़ को वःजीनेकी दुआदेते हैं

गज़ल आगा ।

चाल वह चलतेहैं बिस्मिल मुझे करदेते हैं ।
क्या नइ चालसे महशर की ख़बर देते हैं ॥

मुझको तूफांकी ख़बर दीदए-तर देते हैं ॥
आग़ा साहब भी हुए शेत्फ़ए-हुस्नो-जमाल।
लो हसीनों तुम्हें हम ताज़ा ख़बर देते हैं ११४

गज़ल अमानत ।

ग़ैर कब बोसए-गेसूये सनम लेते हैं।
यह बलाएँ कभी लेते हैं तो हम लेते हैं ॥
मारखाते हैं तेरी ज़ुल्फ़े-सियह छू छूकर।
अपने सर पर यहः बला आपसे हम लेते हैं॥
लोग लिख जाते हैं खुद खत्ते-गुलामी आकर।
मोल लाखोंको वः बेदामो-दिरम लेते हैं ॥
तुमसे सरकशहों हसीनाने-जहां क्या मक़दूर।
सर्व गुलज़ारमें झुक झुकके कदम लेते हैं ॥
दश्त-पैमाईसे थक जाते हैं वहशी शायद।
उनकी दीवारके साएमें जो दम लेते हैं ११५

गज़ल ।

न दिन वस्ल का होगा जो अभी दिनही नहीं।

हो अनोखेतुम्हीं कमसिन कोई कमसिन ही नहीं॥
मांगताहूँ जो दुआ वस्ल की उनके आगे।
चुपके चुपके वः कहे जाते हैं मुम्किन ही नहीं॥
जब शबे-वस्ल उन्हें शौक़ में मैंने खींचा।
हँसके बोले कि अभी मेरा तो कुछ सिन ही नहीं॥
उनसे मतलब की कही बात तो हँसकर बोले।
बात वह कहिये जो मुम्किनहो यह मुम्किनही नहीं
यों तो सुलझैगा न उलझा हुवा बोसोंका हिसाब।
सहूलसाग़र मैं बतादूं तुझे तू गिनही नहीं११६॥

ग़ज़ल आग़ा।

यह तो क्योंकर कहूं फ़रहादसे बढ़कर मैं हूं।
इश्क़का बोझ उठाए हुए सरपर मैं हूं॥
दामे-सैयादमें बे बसहूं कि बे-पर मैं हूं।
जिसके पर नोचे गए हैं वः कबूतर मैं हूं॥
तंग-दस्तीमें भी दिल तंग नहीं है अपना।
माल क़ारूंका लुटादूं वः तवगर मैं हूं॥

बख़्श देवे मुझे प्यारे-ख़ुदा । महशरमें ।
शर्मसार अपने गुनाहोंका सरासर मैं हूं ॥
नज़्म कर लेताहूं कुछ तबअ़के बहलानेको ।
दावए-फ़ह्म है आग़ा न सख़ुन-वर मैं हूं११७

ग़ज़ल आग़ा ।

फ़स्ले गुल आई है रंगत न बदल जाय कहीं ।
तेरा दीवाना न जानेसे निकल जाय कहीं ॥
मुँह सँभालो अजी अबरूका यःबल जाय कहीं ।
गालियां देतेहो तलवार न चल जाय कहीं ॥
गालियां दे चुके झुंझला चुके ख़ामोश रहो ।
मेरे मुँहसे न कोई बात निकल जाय कहीं ॥
बाद मुर्दन न मेरी नाश पै आने देना ।
उनका नन्हांसा कलेजा न दहल जाय कहीं ॥
मीठी बातोंमें न उस शोख़की जाना आग़ा ।
आँखतोतेकी तरहसे न बदल जाय कहीं ११८॥

ग़ज़ल आग़ा ।

दिलफँसा ज़ुल्फ़में लो और तमाशा देखो ।

फिर नए सरसे हुवाहै मुझे सौदा देखो ॥
कब्र में भी न गया दीद्का लपका देखो।
मेरी तुर्बत पे उगे नर्गिसे-शोहला देखो ॥
मुझको दीदार मोयस्सर है परीज़ादोंका।
कहदो मूसासे कि तुम तूरका जलवा देखो ॥
तुम नहीं चलतेहो एजान! छुरीचलतीहै ॥
ज़िब्हकर डालेगा इस चालसे चलना देखो ।
शामरो जोरे-तबीअतसे न बांधो मज़मूं ॥
कमरे-यार में आजायगा झटका देखो।
जानतक देनेमें हमने न कभी उज्र किया ॥
उनका यक बोसेके देनेमें बिगडना देखो।
मिन्नते करके वः कहते हैं न बिगड़ो हमसे ॥
देखो पछतावोगे इस वक्तको आग़ा देखो ११९

गज़ल अमानत।

फिर हुवा ज़ुल्फे गिरह-गीरका सौदा देखो।
फिर पड़ा पाँवमें जंजीरका हल्क़ा देखो ॥

इश्क़में उनके मैं ऐसा हुवा रुसवा देखो ।
जा-बजा लोग मेरा करते हैं चर्चा देखो ॥
हूरको देखो न गिलमांका सरापा देखो ।
चश्मे-बददूर मेरे यारका जलवा देखो ॥
पुतलियां फेर चुकाहूं न तमाशा देखो ।
जान जाती है मेरी रश्के-मसीहा देखो ॥
सर उतरने पै भी तेवर मेरे मैले न हुए ।
हूं रहे-इश्क़में साबित-क़दम ऐसा देखो ॥
नक़्द दिल लेके मेरा नाज़से यों कहते हैं ।
हाथमें मेरे है सब माल तुम्हारा देखो ॥
उनका सीना नज़र आताहै जो उभरा उभरा ।
कोई आञ्चलमें छिपाए हैं वःफितना देखो ॥
हाथ सीने पै अमानतके वःरखकर बोले ।
अब धड़कताहै तो नहीं यार कलेजा देखो १२०

गज़ल आगा ।

किसने रुखसारका दिखला दिया जलवा मुझको ।

किस परी-ज़ादने दीवाना बनाया मुझको ॥
जलवए-हुस्नसे एगाश्न न तरसा मुझको।
सदक़े जाऊं तेरे सूरत तो दिखादे मुझको ॥
फिर सियह वक़्त का है ज़ोर खुदा ख़ैर करे।
ज़ुल्फ़ फिर कानलगी फिर हुवाखटका मुझको॥
फिर फँसा दाममें लो और क़यामत आई।
फिर हुवा नामे-खुदा ज़ुल्फ़का सौदा मुझको ॥
मैं शबे-हिज्र में सोया तो मुक़द्दर जागा ॥
दौलते-वस्लमिलीख्वाबमें आग़ामुझको१२१

ग़ज़ल आग़ा।

दिल अगर ज़ुल्फ़से उलझे तो परेशानी हो।
आंख उस आंखसे लड़जाय तो हैरानी हो॥
जिन्न और इन्सानको हो सब्ज़-परीका धोखा।
आपके जिस्ममें पोशाक अगर धानी हो ॥
तख़्त शाही पै भी हम पाँव नरक्खैं हर्गिज़।
हमको हासिल जो दरे-यारकी दरबानी हो॥

शेख़को इश्क हुवा है यः अजबका है मुक़ाम ।
अक़्लमन्दोंसे भी इस तर्हकी नादानी हो ॥
चुपके रहनेसे नहीं काम निकलता अपना ।
बात फ़रमाइये साहबको जो फ़रमानी हो ॥
किस तरह आंखें मिलाकर तुम्हें देखूं साहब ।
सूरते-आइना मुझको भी न हैरानी हो ॥
दोस्त महफ़ूज रहें रंजो अलमसे आग़ा ।
मेरे दुश्मनको भी यारब न परेशानी हो ॥ १२२ ॥

ग़ज़ल जेवा ।

गर सितम-कश यः हमारा दिले नाशाद नहो ।
नाम दुनिया में तुम्हारा सितम-ईजात नहो ॥
गर तरक्क़ी पै तेरा हुस्ने-खुदा-दाद नहो ।
रोज-अफ़ज़ू तपिशे-दिल मेरा जल्लाद नहो ॥
खुद न आओ न बुलावो न कभी याद करो ।
यह दिले-जार मेरा किस तरह नाशाद-नहो ॥
सरवःक्या सर हैकि जिससरमें न सौदाहो तेरा।

दिलवःक्यादिल है कि जिसदिलमें तेरीयादनहो।
हाय अफ़सोस ! भुलाताहै तू उस्को दिलसे।
जिस्को दुनिया में सिवा तेरे कोई याद नहो॥
चर्ख़ की चाल ज़माने का तरीक़ा सीखो।
हम बता दें जो तुम्हैं तर्जे सितम याद नहो॥
याद है वस्ल में कहना यःकिसी का ज़ेबा।
मैंहूं पहलू में तेरे अबतो तू नाशाद नहो १२३॥

ग़ज़ल।

अपने जोबनसे वः कहते हैं उभरते क्यों हो।
मुफ्त का बोझ मेरे सीने पै धरते क्यों हो॥
हाय उठते हुए-जोबनसे यः कहना उनका।
और घेरैंगे हमैं लोग उभरते क्यों हो॥
दुख्ते-रज़से तुम्हैं मैख्वार भिड़ाही देंगे।
शेख़जी महफ़िले रिन्दा से गुज़रते क्यों हो॥
बढ़ के तलवार लगाओ यः झिझकना कैसा।
क़त्लका शौक़ जो रखते हो तो डरते क्यों हो॥

जब कहा मैंने कि मरताहूं तो बोले मरजाव ।
तुमको मरना है तो फिर मरनेसे डरते क्यों हो॥
देखकर अपनी गली में वः जनाज़ा मेरा ।
बोले बदनाम मुझे मरके भी करते क्यों हो ॥
उठता-जोबन किसी नौख़ेज का देखा शायद ।
ए मेरे दाग़े-जिगर आज उभरते क्यों हो १२४॥

गज़ल अहमदी ।

तिश्नए शर्बते दीदार हूं वल्ला बिल्ला ।
यक नज़ारे का तलबगार हूं वल्ला बिल्ला ॥
कीजिये कब्र पै साया मेरी तलवारोंका ।
कुश्तए-अबरूह-खमदार हूं वल्ला बिल्ला ॥
चरने आएंगे मेरी कब्रका सब्जा आहू ।
नर्गिसे-चश्मका बीमार हूँ वल्ला बिल्ला ॥
तुम झरोखोंमें भी आते नहीं गाहे माहे ।
मैं तड़पता पसे-दीवार हूं वल्ला बिल्ला ॥
बन्दए-हुस्नहूं पढ़ता हूं बुतोंका कल्मा ।

हाफ़िज़े-मसहफ़े-रुखसार हूं बल्ला बिल्ला ॥
अहमदी हुस्न-परस्तोंमें तो यकता हूं मैं ।
अच्छी सूरतका तलबगार हूं वल्ला बिल्ला १२५

ग़जल ।

गाली देनेंकी हसीनोंमें है आदत अच्छी ।
है बुरा बातभी अच्छी, जो हो सूरत अच्छी॥
फूलसे गाल हैं और दिलमें भरे हैं कांटे ।
सूरत अच्छी है बुतोंकी, नहीं सारत अच्छी॥
दीनो-ईमां की बशर को नहीं रहती पर्वा ।
मेरे ख़ालिक़ न दिकाना कोई सूरत अच्छी॥
इस्के मारे है हमें घरसे निकलना मुश्किल ।
यह मचल जाताहै दिल, देखके सूरत अच्छी॥
बनके बेहोश लिया पाये-सनम का बोसा ।
होशियारी से तमन्ना की है ग़फ़लत अच्छी॥

ग़ज़ल ।

सर चढ़ाते हो इन्हें यह नहीं आदत अच्छी

ग़ैर फिर ग़ैर हैं इन्की नहीं सोहबत अच्छी ॥
शुक्र है ग़ैर भी अब टाल दिये जाते हैं ।
उन्को इन्कारकी क्या होगई आदत अच्छी ॥
जब गया मैं दरे दौलत पै यही फ़रमाया ।
उनसे कह दो कि नहीं आज तबीअत अच्छी॥
मुझकोबुलवाया भी और ग़ैरोंसे उठवा भी दिया।
की मेरे हाल पै ज़ालिमने इनायत अच्छी ॥
मेरी महफ़िलमें वः आतेही यः कहकर पलटे ।
सब बुरे लोग हैं या यह नहीं सोहबत अच्छी॥
हाथ लगजाय बदनसे तो वः उफ़् करते हैं ।
मेरे अरमानोंकी दुश्मन है नज़ाकत अच्छी ॥
दिल तुम्हें देते हैं बोसेका न इनकार करो ।
देखो इस वक़्तमें हाथ आती है क़ीमत अच्छी॥
नक्ददिल बोसए-लबपर जो मिला हैरत क्या ।
मालअच्छाहोतो हाथ आती है कीमत अच्छी ॥
क्योंन हो खूबग़ज़ल क्योंन हों अच्छेअशआर ।
हज़रते सबर तुम्हारीहै तबीअत अच्छी॥१२७॥

गज़ल ।

जो अदाढाए तुम्हारी वः है आफ़त अच्छी ।
नाज़की चालसे उट्ठे वः क़यामत अच्छी ॥
आप नाराज़ हों जिसमें वःखुशी है बद-तर ।
आपकी जिसमें खुशी हो वः मुसीबत अच्छी॥
हाथसे अपने जो जाए वः बहुत बेहतर दिल ।
अच्छी सूरत पे जो आए वः तबीअत अच्छी॥
आपसा मिलगया माशूक तरहदार मुझे ।
मैं बुरा हूं तो हूं पर है मेरी क़िसमत अच्छी ॥
क्या ग़रज़ लाख खोदाईमें हों दौलतवाले ।
उनका बन्दा हूं जो रखते हैं तबीअतअच्छी॥
लाख माशूकोंका माशूक जमानेमें वः है ।
जिसको अल्लाहने बख्शी है तबीअत अच्छी ॥
दर्दे-उल्फ़तकी दवा खाक अतिब्बा जानें ।
हांजो तुम चाहो तो होजाय तबीअत अच्छी १२८

गज़ल अहमदी ।

जान दें दूंगा मैं लेलेके बलाएं तेरी ।

भा गई हैं मुझे वल्लाह अदाएं तेरी ॥
कुछ मैं दीवाना हूं! फिर दिल जो लगाऊं तुझसे
बे-वफ़ा याद हैं सब मुझको जफ़ाएं तेरी ॥
पाय-बोसीको कहा मैंने तो बोले हँसकर।
हम तो ठोकर भी न तर्बतको लगाए तेरी॥
मुफ्त सौदाई न बन दिलको न ज़ुल्फोंमें फँसा।
अहमदी देख न फिर शामतैं आएँ तेरी १२९

गज़ल श्याम ।

हुस्नके साथ हसीनोंमें नज़ाकत होती ।
शोखिए-चश्म के हमराह शरारत होती ॥
नहया वस्ल में होती न नज़ाकत होती ।
फिर तो कुछ औरही लुत्फ़ औरही सोहबतहोती
ज़ाहिदो उनकेसे गर नाज़ो करिश्मे होते ।
तब तो अलबत्ता हमें हूरको चाहत होती॥
ग़म ज़दादिलके लिये कुछ तो दिलासा होता
लाख होते जो सितम एक इनायत होती ॥

क्याहैअन्दाजे़-सखुनश्यामकाक्यातर्जे़-कलाम
है हर-इक शेर पै कुर्बान फ़साहत होती १२०॥

गज़ल वज़ीर ।

कत्ल करते हैं वः हरदम मुझे आते जाते ।
तेग़ अबरू के यः जौहर हैं दिखाते जाते ॥
जलवए-रूय-मुनौवर तो दिखाते जाते ।
अपने आशिक़ को मेरी जान जिलाते जाते ॥
तोड़ताहै दिले आशिक़को खेलौने की तरह।
यह लड़कपन तो तेरा जायगा जाते जाते ॥
हश्र वर्पा हुवा या सरपे क़यामत आई ।
हैं वः पाजे़ब की झनकार सुनाते जाते ॥
क़त्लके बाद भी ईतना न किया रह्म वज़ीर
कुश्तए-नाज़ पै चादर तो ओढ़ाते जाते १२१

ग़ज़ल आलम ।

छेड़ फिर हमसे निकाली है यःआते जाते ।
खुद बखुद सैकडों बातें हैं सुनाते जाते ॥

नए अन्दाज़ हैं हररोज़ दिखाते जाते ।
दिले-उश्शाक़ में हैं आग लगाते जाते ॥
रोज़ जल्से हैं रक़ीबों से जमाते जाते ।
याद हरदम मेरी दिलसे हैं भुलाते जाते ॥
हैफ़ है मेरे जलाने के लिये ग़ैरों को ।
करके आंखों से इशारे हैं बुलाते जाते ॥
रात बाक़ी थी बहुत बोला सहर होती है ।
करगया पेच नया मुझसे वः जाते जाते ॥
क़त्ल गह करते हैं पा-माल कभी करतेहैं ।
फ़ितने हररोज़ नए हैं वः उठाते जाते ॥
क्यों हुई ज़ुल्फे-रसाता-ब-कमर ख़ैर तो है ।
किसलिये वह इसे आज़म हैंबढ़ातेजाते १३२

गज़ल बिस्मिल ।

ए शहे-हुस्न ! मेरे घर जो तुम आया करते ।
हम भी आंखौंको सरे-राह बिछाया करते ॥
तीर नज़रोंके अगर यारके आया करते ।

हम उन्हैं दिलमें कलेजेमें बिठाया करते ॥
क्या कहा आपने हम आते तुम क्या करते ।
टकटकी बांधके हम आपको देखा करते ॥
यह न पूछो तेरी तसवीरको हम क्या करते ।
कभी आंखोंसे लगाते कभी देखा करते ॥
वर्क़सां हज़रते दिल तुम जो न तड़पा करते ।
सूरते-अब्र न हम यों कभी रोया करते ॥
तंग हैं हाथोंसे उल्फ़तके वगर्ना हमको ।
गालियां आप न हररोज़ सुनाया करते ॥
तेग़ अन्दाज़से बिस्मिलको न करते बिस्मिल।
खौ़फ़ ग़रए-बुतो तुम कुछ भी ख़ुदाका करते १२२

ग़ज़ल आग़ा ।

बढ़के सम्बुलसे वः गेसूए-मुअम्बर निकले ।
मुश्को-अम्बरभी न ख़ुश्बू में बराबर निकले ।
हमभी इन भूजियोंसे जान बचाकर निकले ॥
कूचए-ज़ुल्फ़से पढते हुए मन्तर निकले ॥

गर नहो क़द्र तो फिर शेरका कहना कैसा ।
आबरू जब हुई तब बह्रसे गाहर निकले ॥
साथही सोए मगर दिलकी न हसरत निकली ।
वस्लकी रातमें भी शिकवोंके दफ्तर निकले ॥
शोर क्यों इतना मचाताहै अभीसे आग़ा ।
न बहार आईचमनमें न गुले-तर निकले १३४

गज़ल आगा ।

ख़ाकमें मिलगए सब ज़ोर जतानेवाले ।
दफ्न हैं ज़ेरे-ज़मीं अर्श हिलाने वाले ॥
हम हैं इस कूचेमें सीना सिपर आनेवाले ।
यक नज़र हम पै भी ए-तीर-चलानेवाले ॥
क्यों न बिगड़ें तेरीज़ुल्फ़ोंके बनानेवाले ।
धोखा खाजाते हैं कालोंके खेलानेवाले ॥
किसको दिल दीजिये जां कीजिये सदकेकिसपर
नज़र आते नहीं आंखोंमें समानेवाले ॥
ज़ेर ख़िंजरभी रहेगी तेरी ख़ातिर मंजूर ।

सरसे आंखोंसे हैं हम नाज़ उठाने वाले ॥
शमओ-परवानाको देखा तो हुवायह रोशन।
ठंढे रहते नहीं आशिक़के जलानेवाले ॥
कोई आगे कोई पीछे है रवाना आग़ा।
सबहीहैं मंजिले-मक़सूदके जानेवाले॥१३८॥

गज़ल अमीरमीनाई।

इश्क़ में जांसे गुज़रते हैं गुज़रने वाले।
मौतकी राह नहीं देखते मरने वाले ॥
दाग़े-दिलसे मेरे कहताहै यः उसका जोबन।
देख इस तरह गुज़रते हैं गुज़रने वाले ॥
आखिरी वक़्तभी पूरा न किया वादए वस्ल।
आप आतेही रहे मरगए मरने वाले ॥
उठ्ठे और कूचए-महबूब में पहुँचे आशिक़।
यह मुसाफ़िर नहीं रस्तेमें ठहरने वाले ॥
जान देनेको कहा मैंने तो हँसकर बोले।
तुम सलामत रहो हर रोज़के मरनेवाले ॥

तेग़ो-खंजरसे न झगड़ा सरो-गर्दन काचुका।
चल दिये मोड़के मुँहँ फ़ैसला करने वाले॥
आसमां पर जो सितारे नज़र आये-**अमीर!**
याद आए मुझे दाग़ अपने उभरनेवाले १२६

ग़ज़ल दाग़।

मर्हबा ए-दिलो-दीं लेके मुकरनेवाले।
हाथ कानों पै मेरे नामसे धरनेवाले॥
देखता जा इधर ओ क़हरसे डरनेवाले।
नीची नज़रें किये महशरमें गुज़रनेवाले॥
मदफ़ने-अहले-बफ़ापर यः दुआकी उसने।
हश्रके दिन भी न पैदाहों यः मरनेवाले॥
गालियांको देताहूँ सुनो तुम ख़ामोश।
मैं भी देखूं तो बड़े बात न करनेवाले॥
एक तो हुस्न बला उसपै बनावट आफ़त।
घर बिगाड़ेंगे हज़ारोंके सँवरनेवाले॥
हश्रमें लुत्फ़ हो जब उनसे हो दोदो बातें।

वह कहैं कौन हो तुम हम कहैं मरनेवाले ॥
चूसकर किसने छुडाई है धडी होठोंकी ।
सामने मुँहँ तो करैं बात न करनेवाले ॥
उम्र क्या है अभी कम-सिन हैं नतनहालेटैं।
सो रहैं पास मेरे ख़्वाबमें डरनेवाले ॥
कब्रपर आके वः ताकीद यः फ़रमाते हैं ।
आशिके हूर न होना मेरे मरनेवाले ॥
दाग़ कहते हैं जिन्हैं देखिये वह बैठे हैं ।
आपकी जानसे दूर आप पै मरनेवाले १२७

गज़ल कैफ़ ।

क्या पुकारूं मैं उन्हैं वह नहीं आनेवाले ।
सख़्त बे दर्द हैं मुँहँफेरके जानेवाले ॥
बज्ममें यारको पूछे जो कोई बतलादूं ।
शमअके पास व बैठे हैं जलानेवाले ॥
क्याकहैंकटती हैक्योंकरशबे-फ़ुर्क़तअपनी ॥
बैठे रहते हैं जनाजेके उठानेवाले ॥

हम पसे-मर्ग भी यों गोरमें चिल्लाएंगे ।
खुश रहैं छोड़के तनहा हमैं जानेवाले ॥
कफ़ आएंगे लहदमें भी तशफ्फ़ीके लिये ।
सोज़िशे-नारे जहन्नुमसे बचानेवाले ॥ १३८॥

ग़ज़ल ।

रूह किस मस्तकी प्यासी गई मैं ख़ानेसे ।
मैं उडी जाती है साक़ी तेरे पैमानेसे ॥
हमको अफ़सोस हो क्यों थोड़ीसी गिरजानेसे ।
मस्त हैं और उठालेएंगे मैं-ख़ानेसे ॥
शेख़जी रहती हैं. क्यों सुर्ख तुम्हारी आंखें ।
शबको क्या लालपरी आती हैं मैं-ख़ानेसे ॥
ख़ैर गुज़री चलो दस्तार ही दस्तार गई ।
शेख़ जी अब न उलझना किसी मस्तानेसे ॥
बाद ए-वस्लकी तकरार ने मारा मुझको ।
फ़ैसला खूब हुवा बात के बढजानेसे ॥

मुजरिमे-इश्कके अरमान निराले देखे।
जुर्मका हौसला बढ़ता है सज़ा पानेसे॥
एक चिल्लूमें बहुत दाग़ बहक उठते थे।
सुनते हैं आज निकाले गए मैं-ख़ानेसे॥१३१॥

गज़ल।

सूए, मस्जिद नहीं जानेके हैं मैं-ख़ाने से।
हम बहकने के नहीं ज़ाहिदा बहकाने से॥
हमको शीशे से न मतलब है न पैमाने से।
मस्त हैं कूचए-साक़ी की हवा खानेसे॥
बाग़ मे झूमते आते नहीं काले बादल।
खुम चले आते हैं उड़ते हुए मैं-ख़ाने से॥
नाज़ु है हज़रते-नासहको फ़क़त तोबापर।
वह है रीन्दों की निकाली हुई मै-ख़ाने से॥
क़ाजिये शहर हो या शेख़े-हिरम कोई हो।
जो न हो मस्त निकालो उसे मै-ख़ाने से॥
दीभी मै शेख़को साक़ीनें तो तहक़ीरके साथ।
तोबा तोड़ी भी तो टूटे हुए पैमाने से॥

हूं मैं वह रिन्दजो यकदिन भी नहीं जाताहूं।
बूए-मै आतीहै लेने मुझे मै-ख़ानेसे॥ १४० ॥

गज़ल अमानत।

ज़ुल्मो-बेदाद योंही ओ सितम-ईजाद रहे।
रोज़ अफ़्ज़ूं यः तेरा हुस्ने-ख़ुदा-दाद रहे॥
अपनी तक़दीरमें लक्खीथी जो सहरा गर्दी।
कैसो वामिक़ की तरह खानुमां बर्बाद रहे॥
खूनका लुत्फ़ मेरे उस्को चखाते रहना।
तेग़ हल्कूम पै हरदम मेरे जल्लाद रहे॥
लब तलक आए न फ़रयाद न हो शोरो-फ़ुग़ाँ।
यारका पासे-नज़ाकत दिले-नाशाद रहे॥
हो गिरफ्तार न उल्फ़त में अमानत कोई।
सर्वसां इस चमने-दह्रमें आबाद रहे॥ १४१

गज़लआग़ा।

क़िस्से परियोंके मुझे याद हैं अच्छे अच्छे।
बन्द शीशेमें परी-ज़ाद हैं अच्छे अच्छे॥

आपके इश्क़में बर्बाद हैं अच्छे अच्छे ।
आप तो शाद हैं नाशा हैं अच्छे अच्छे ॥
शेख़ो-ज़ाहिदकीभी पड़ती है हसीनों पैनज़र।
मायले-हुस्ने-ख़ुदादा हैं अच्छे अच्छे ॥
किसी माशूक़को मुर्दा न जिलाते देखा ।
जान लेनेको तो उस्ताद हैं अच्छे अच्छे ॥
ज़ख़्मे-दिल पर कोई मरहम नहींरखनेवाला।
क़त्ल करनेको तो जल्लाद हैं अच्छे अच्छे ॥
क्या फ़क़त हज़रते-यूसुफ़हीको झँकवाएं कुएँ।
आपकी चाहमें बर्बाद हैं अच्छे अच्छे ॥
दिल को लेलेते हो यक आनमें बैठे बैठे ।
फ़नलगावटकेतुम्हेंयादहैंअच्छे अच्छे१४२॥

ग़ज़लजार ।

आरज़ू है कि मेरा दम तेरे दरपर निकले ।
तेरा बीमार तेरे कूचेसे मरकर निकले ॥
न तो खिड़कीसे वः झाँके न तो बाहरनिकले।
फिर भला हसरते-दीदारयः क्योंकरनिकले॥

जब कहा मैंने गला काटके मरजाऊं मैं।
हँसके बोले मेरी शम्शीरका जौहर निकले॥
पहले यह नाज यःशोखी यःशरारत कब थी।
अब तो दो हाथ क़यामतसेभी बढ़कर निकले॥
जब कहा मैंने लिपट जाओ मेरे सीनेसे।
हँसके फ़र्माया कि अब आपके भी पर निकले॥
दस्ते-गुस्ताख़ न बढ़जाय उन्हें खौफ़ यः था।
इसलिये क़ब्रसे दामन वः बचाकर निकले॥
हमनशीं हज़रते-उस्तादके शागिर्दोंमें।
हां जो निकलेभीतो कुछ ज़ारसकुन-वरनिकले

वज़न (१०)

"फायलातुन् फ़ायलातुन् फ़ायलातुन् फ़ायलुन्"

गज़ल ज़रूमी।

(विहागरा ताल गजल)

ए दिला! बचना हसीनों की नज़रसे देखना।
नाजाना अब कहीं उस फित्ना-गरसे देखना॥

फँसगया है दिल मेरा उस बेखबरसे देखना।
जो समझता गुनह तो सीधी नज़रसे देखना॥
दिलनहीं काबूमें रहता जिसघड़ी आताहै याद।
मुस्कराकर वह तेरा तिर्छी-नज़रसे देखना॥
कबसे हम मुश्ताक़ बैठे हैं तेरे दीदार के।
आज हमको भी जरा सीधी नज़रसे देखना॥
अब न दिल देना उसे ज़ख्मी कहे देताहूं मैं।
दूरही रहना सदा उस बेख़बरसे देखना १४४॥

गज़ल ऐश।

मायल उस पर्दा-नशी पर है तबीअत देखता।
उम्र भर है ग़ैर मुम्किन् जिस्की सूरत देखना।
नाज़की रफ़्तार से चलना अगर आया तुम्हें।
ठोकरैं खाती फिरेगी फिर कयामत देखना॥
जब सुना बीमार-उल्फ़त है हमारा जां-ब-लब॥
खुद चले आए अयादत को मुहब्बत देखना॥
वस्फ़े-गेसू मुझसे सुनकर ग़ैर से कहता है यार।

केस बलाकी पाई है इसने तबीअत देखना ॥
ता-लहद दोशे-हसीनां पर जनाज़ा जायगा ।
ऐश मरनेपर मेरे लाशेकी शौकत देखना १४८

गज़ल रसा ।

दिल मेरा तीरे सितम-गर का निशाना होगया ।
आफ़ते-जां हक़में मेरे दिल-लगाना होगया ॥
ख़ाकसारीने दिखाया बादे-मुर्दन भी उरूज ।
आस्मां तुर्बत पै मेरी शामियाना होगया ॥
फ़स्ले-गुलमें भी न कुछ सूरत रिहाईकी हुई ।
क़ैदमें सैयाद मुझको यक ज़माना होगया ॥
बादे-मुर्दन कौन आता है ख़बर को ए-रसा ।
ख़त्म सब कुंजे-लहद तक दोस्ताना होगया १४९

ग़ज़ल अमानत ।

सर न तनसे कट सका बे-कार ख़ंजर होगया ।
सख्त-जानीसे मेरी आजिज सितम्-गर होगया ॥
रूह जब तनहा मेरी जाने लगी सूए-अदम् ।

हस्रतो-अन्दोह का हमराह लश्कर होगया ॥
उनके तेग़े नाज़से सीने की कड़ियां कटगईं।
चार-दीवारे-अनासिर में नयादर होगया ॥
वस्फ़े-ज़ुल्फ़ः अम्बरी जिस दम हुवा उसपर रक़म।
पर्चए-क़िर्तास सर तासर मोअत्तर होगया ॥
क्या ख़ताओ-जुर्मक्याबाइससबबक्याक्यावजह।
सच कहो आईनए-दिल क्यों मुकद्दर होगया ॥
अक़्ल हैरां होगई उनके दहाने-तंग से ॥
चश्मए:हैवां मेंसर-गर्दां सिकन्दर होगया ॥
हासिले-इश्क़े-बुतां हमको अमानत यह हुवा।
अपनी रुसवाईका चर्चा आजघरघरहोगया १४७

गज़ल।

कूचए-दिलदारमें आशिक़ का मस्कन होगया।
बुलबुले-शैदाका गुलशनमें नशेमन होगया ॥
बाहरी दुनिया जो हमने दोस्तीकी आपसे।
लीजिये सारा ज़माना अपना दुश्मन होगया ॥

ख़तभी गर्दनपर न आया, तेग़ बल खाखागई ।
सख़्त-जानीसे हमारी, मोम आहन होगया ॥
अम्बरी-ज़ुल्फ़ें रुख़े-अनवरसे आकर मिलगईं ।
तिब्बतो-तातारियोंका एक मस्कन होगया ॥
ज़ब्ते ख़ामोशी अगर पूछो तो इस्का नाम है ।
बुतनबोलेउम्रभरआ जिज़बरहमनहोगया १४८॥

ग़ज़लशंकर ।

रूए-रोशन पर फ़िदा जबसे मेरा दिल होगया ।
ख़ाले-आरिज़ उन्का मेरी आंखका तिल होगया ॥
मुस्करा उट्ठे सवाले-वस्ल पर वह झेपकर ।
मुद्दआ दिलका हमारे आज हासिल होगया ॥
दस्ते-क़ातिलमें न ठहरा नीमचा गिरगिरपड़ा ।
क़त्ल पर मेरे उठाना हाथ मुस्किल होगया ॥
एक दिन वह था हमारी यादसे ख़ाली न थे ।
अब हमारा नाम लेना उन्को मुश्किल होगया ॥
वस्ली शब हँसके शंकरसे व:फ़रमाने लगे ॥
मुद्दआदिलकातुम्हारेअबतोहासिल होगया१४९

ग़ज़ल अमानत ।

जब तुम्हारे हुस्नका हरचारसू शोहरा हुवा ।
तब हमारे इश्क़का भी जाबजा चर्चा हुवा ॥
उन्की ज़ुल्फ़ें-अम्बरी का बारहा सौदा हुवा ।
है मेरा मुल्के-खुतन सौबारका देखा हुवा ॥
"ज़ाफ़रानी जबदुपट्टाजेबतक करकेवःगुल ।
बहरे-गुल-गश्तेचमनउठकरचलाहँसताहुवा॥
दाग़ लालाको हुवा गेंदे पै ज़र्दी छागई ।
चांदनीका फूलग़ैरत से रहाजलता हुवा"॥
होगए तेग़े-अदासे सैकड़ोंके सर क़लम ।
दो क़दमाजिसदमचलेतुमहश्रयकबरपाहुवा॥
दुश्मनी अहले-हुनरसे रखताहै पीरे-फ़लक ।
बे हुनरजो मैं रहादुनियामें यह अच्छाहुवा॥
हाथ सीनेपर मेरे रखकर वः यों कहने लगे ।
अबतोचैनआया अमानतअबतोदिलठंडाहुवा

ग़ज़लवासित ।

गेसुए-पेचांका सरमें फिर मेरे सौदा हुवा

सरपै परीयोंका मेरे अल्लाह फिर साया हुवा ॥
एक जानिब ज़ुल्फमें मोती पिरोए आपने ।
एक तो काला रहा और एक कौड़ीला हुवा ॥
क़त्ल करडाला तुम्हारी चश्मकी तहरीरने ।
खंजरे-बुर्रां हमैं मुर्मे-का-दुम्बाला हुवा ॥
आपको पूरा मसीहा जब मैं जानूंगा हुजूर ।
जब किसीका आप दम ठहराएंगे जाताहुवा॥
रात दिनके कौन रंजो-गम उठाए जानपर ।
बासित उन्से होगई चकमक यही अच्छा हुवा

गज़ल सफ़दर ।

था शिकायतका जो उनसे हौसिला जातारहा ।
सामना जब होगया सारा गिला जातारहा ।
वाय-क़िस्मत बेखुदीमें खोगई तसवीरे-यार ॥
दिलके बहलानेका यहभी मश्ग़ला जातारहा ।
इस्क़दर सदमें सहे हमने बुतोंके इश्कमें ॥
दिल लगानेका किसीसे होसिला जातारहा ।

दोस्तोंके हाथसे सदमें उठाये इस्क़दर ॥
दिलसे अपने दुश्मनोंका भी गिला जातारहा ॥
अहदे-पीरीमें कहां सफ़दर जवानीकी तरंग।
वह बहार आख़िर हुई, वह कल्वला जातारहा १५

गज़ल सफ़दर।

आबदारी पर है फिर शमशीरे-क़ातिल आजकल।
फिर तड़पतेहैं पडे बिस्मिल पै बिस्मिल आजकल
खुमके खुम उलटे पडे हैं मैं-कदेमें चार सू।
क़ाबिले-नज्जारा है मस्तोंकी महफिल आजकल
दो घडी गुलशन में चलकर सैरे-संबुल देखिये।
यादे-गेसूमें परेशां है बहुत दिल आजकल ॥
ठंढी सांसें क्यों हैं लबपर कुछ तो है सफ़दर कहो
किस परी-रू पर हुएहैं आप मायल आजकल १

गज़ल अमानत लखनवी।

इश्क़का खञ्जर लगाहै दिल पै कारी इन दिनों।
ज़ख्मकी सूरत है खूं आंखोंसे जारी इन दिनों॥

बाग़में जाती है उस गुलकी सवारी इन दिनों।
दम चोराए फिरती है बादे-बहारी इन दिनों॥
भोली भोली शक्लपर दिल लोट जाता है सनम्।
क्याही सूरत होगई है प्यारी प्यारी इन दिनों॥
क़त्ल करता है अरक़-आलूदा अबरू ख़ल्क़को।
क्या तेरी तलवारकी है आबदारी इनदिनों॥
इश्क़के आज़ारने लाग़र किया है इस्क़दर।
शक्ल पहँचानी नहीं जाती हमारी इन दिनों॥
ठंढी साँसैं भरते हो हरदम **अमानत** किसलिये।
जान जातीहै कहोकिसपर तुम्हारी इन दिनों१५४

ग़ज़ल आग़ा।

रंग लाई है हमारी अश्क-बारी इन दिनों।
अश्ककी जा खून आँखोंसे है जारी इन दिनों॥
नोक है जोबन पै उनके-होरही है नोक झोंक।
चल रही है उनके कूचेमें कटारी इन दिनों॥
ज़ुल्फ़की खुश्बू जो निकली पानी पानी होगया।

किरकिरी शेखी हुई अम्बरकी सारी इनदिनों ॥
कोई ताज़ा गुल खिलेगा बुलबुलोंकी ख़ैर हो।
होगई सैयाद और गुलचीमें यारी इन दिनों ॥
बामपर उनके गए कल रातको हस्बुल तलब।
होगई मेराज उल्फतमें हमारी इन दिनों ॥
माल मारा था जिन्होंने वह हुए तहसीलदार।
गँठ-कटोंको होगई है थानादारी इन दिनों ॥
आग़ा साहब क्योंन अब रोशन करें घीके चिराग़।
यक परी शीशेके अंदर फिर उतारी इनदिनों १८९

गज़ल सफ़दर।

पड़गया क्या ज़ख्म तेगे-इश्क़ कारी इन दिनों।
मुर्ग़े-बिस्मिल की तड़प है बेक़रारी इन दिनों ॥
वाह क्या जोबन पै है हुस्ने उरूसांने चमन।
नाज़ करती फिरती है बादे-बहारी इन दिनों ॥
जा-बजा सब्ज़ा हवाएं सर्द नहरें मौज-ज़न।
क्या गुलिस्तामें है लुत्फ़े बादा ख्वारी इन दिनों।

फ़ुर्क़ते-जाना में दिलने भी हमारे तर्क की।
हम-नशीनी ग़म गुसारी दोस्तदारी इन दिनों॥
फ़स्ले-गुलमें तोड़िये तोबा रहा जाता नहीं।
क्या करें सफ़दर कि है बे अख्तियारीइनदिनों॥

गज़ल आग़ा।

काट बढ़कर तेग़से है अबरुए-ख़मदारमें।
सैकड़ों बेदम हों यह जौहर कहां तलवारमें॥
उस तरफ़ अबरू हिलाया दिलके टुकड़े होगए।
वाह क़ातिल! वाह! अच्छी बाढ़ है तलवारमें॥
नाफ़हाए-मुश्क कौड़ीको न लेगा फिर कोई।
बूए-ज़ुल्फ़े अम्बरीं पहुँची अगर तातार में॥
आंख तुझसे क्या मिलाएँ तेरी आंखोंकी क़सम।
ताब-नज़्ज़ारा नहीं है नर्गिसे बीमार में॥
जिस तरफ़को जाइये आग़ा पता मिलता नहीं।
दैरो-काबा छान डाला है फ़िराके यारमें॥ १८७॥

गज़ल ज़फ़र।

कुफ़्रसे ईमां मिला इस मुल्के-हस्तीमें हमें।

इश्क़-परस्ती हाथ आई बुत-परस्तीमें हमें ॥
जोशे-वहशतके हमारे औरही कुछ ढंग हैं।
रहने देगा यह न जंगलमें न बस्तीमें हमें ॥
अब्रे-बारांमें सिवा होता है मे-नोशीका लुत्फ़।
साक़िया दे जामे-मै बदली बरस्तीमें हमें ॥
ए ज़फ़र जो कुछ्छे किये हमने ज़बरदस्तीसे काम।
उनके बदले मिल रहेहैं ज़ेर-दस्तीमें हमें॥ १५८॥

ग़ज़ल आग़ा।

अहलेदुनियाको नहीं है चैन दमभर रातदिन।
फ़िक्रमें दौलतके रहते हैं तवंगर रातदिन ॥
ओज पाकर कोई गर्दिशके नहीं खाली रहा ॥
माहको खुरशेदको रहता है चक्कर रातदिन ॥
संग-दिल माशूक़ गर तू ए परी पैकर नहीं ॥
तेरे दीवाने पै क्यों पड़ते हैं पत्थर रातदिन ॥
ओ मेरे महबूबे-आली मंज़िलत ! शम्शो-क़मर।
तेरे कूचेमें किया करते हैं चक्कर रात दिन ॥

चैनसे आग़ा गुज़रती है मेरी लैलो-नहार।
अपनेसीनेसे लगा रहताहै दिलबर रातदिन १६९

गज़ल सलीस।

जोड़नेसे हाथके तक़सीर दोहरी होगई।
पावँ जब उस्के पडा ताज़ीर दोहरी होगई॥
अपने हाथोंसे उसे घिसकर लगाते हैं हुजूर।
क्यों न सन्दल सर चढ़े तासीर दोहरी होगई॥
उज्र उसने इस ज़ईफो-नातवानीका किया।
जब मुसौवरसे मेरी तसवीर दोहरी होगई॥
यारकी जुट्टी-भवोंपर पड़गया गुस्समें बल।
आज क़ातिलकी मेरे शम्शीर दोहरी होगई॥
वस्लका एक़रार है लबपर कभी इन्कार है।
अबतो कुछ ओ बुत! तेरी तक़रीर दोहरी होगई॥
पहलेथी आरिज़ पै ज़ुल्फ़ै अब नमूदे-ख़तहुवा।
मुसहफ़ रुख़सारकी तफ़सीर दोहरी होगई॥
एकतो था फ़ख्र उस्के घरपै जानेसे सलीस।

उसके आनेसे मेरी तौक़ीर दोहरी होगई॥१६०॥

गज़ल अमानत।

ग़ैरके बाइस मेरी तौक़ीर आधी रहगई।
कूए-जानांकी जो थी जागीर आधी रहगई॥
आकेआधी दूरतक क्यों फिर गए वह राहसे।
क्या हुआ ए आह क्यों तासीर आधी रहगई॥
बातकुछ कहने न पाया उनके रोबे-हुस्नसे।
गुफ्तगू आधी हुई तक़रीर आधी रहगई॥
अल्ला अल्ला किस्क़दर नक़्शे-कफ़े-पामेंहैनूर।
ज़र्द सूरज होगया तनवीर आधी रहगई॥
सख्त-जानीने मेरी गर्दन क़लम होने न दी।
घिसते घिसते घिसगई शम्शीर आधी रहगई॥
तेरी रहमतके तसद्दुक क्यों न हो हम ए करीम।
सामने जिस दम गए तक़्सीर आधी रहगई॥
रोते रोते हिज्रमें-जिसमें अमानत घटगया।
वारिशे-बारांसे यह तामीर आधी रहगई१६१॥

---

१ प्रतिष्ठा।

गज़ल अमीरमीनाई ।

कहरही है हश्रमें वह आंख शर्माई हुई ।
हाय ! कैसी इस भरी महफ़िलमें रुसवाई हुई ॥
ठोकरें खिलवाएगी यह चाल इठलाई हुई ।
क्या जवानी फिरती है जोबन पै इतराई हुई ॥
कैफ़े मस्तीमेंभी रहताहै यःजोबनका लिहाज़ ।
उन्को अँगड़ाई भी आतीहै तो शर्माई हुई ॥
वस्लमें ख़ाली हुई अग़्यारोंसे महफिल तो क्या ।
शर्म भी जाए तो मैं जानूं कि तनहाई हुई ॥
गर्दउड़ी आशिक़की तुबतसे तो झुँझलाकर कहा ।
वाह! सर चढ़ने लगी पावोंकी ठोकराई हुई ॥
वस्लकी शब बाहरी वेताबिए-शौक़े-बिसाल ।
शर्म भी नीची निगाहों में तमाशाई हुई ॥
शेरेगुलदस्तेमें मुझ अफ़सुर्दा-दिलके क्या अमीर
दामने गुलचींमें कुछ कलियांहैं मुरझाई हुई १६२

गज़ल दाग़ ।

हर अदा मस्ताना सरसे पांवँतक छाई हुई ।

उफ़ तेरी काफ़िर जवानी जोशपर आई हुई ॥
यहमिला जिक्रे-कयामतपर क़यामतका जवाब ।
क्या उठेगी वह हमारी ठोकरें खाई हुई ॥
तोबा कर ज़ाहिद करूं तोबा मैं ऐसे वक्तमें ।
यह बहार आई हुई, ऐसी घटा छाई हुई ॥
देखकर क़ातिलकी आमद दाग़ दिलमें शादशाद ।
और ग़मख्वारोंके मुँहपर मुर्दनी छाई हुई १६३॥

गजल सफ़दर ।

कर गई अंधेर बरसों बे-बफ़ाई आपकी ।
चार दिनकी चांदनी थी आशनाई आपकी॥
क्या कहूं क्या कुछ मज़ेलूटे निगाहे-शौक़ने ।
हटगई जिसवक्त सीनेसे दुलाई आपकी ॥
आमदे-फस्ले-खिज़ां है रुखसते-फ़सले-बहार।
वस्ल देखा देखनी अब है जुदाई आपकी ॥
याद है कहना किसीका सर झुकाकर वस्लमें।
अब तो कुछ शिकवा नहीं हसरतबराई आपकी।

रफ्ता रफ्ता हजरते-सकंदर कहां पहुँचा कलाम।
आसमांपर यह ग़ज़लजोहराने गाईआपकी १६४

ग़ज़ल ।

दस्त-रस हाथोंकी सीनेतक अगर हो जायगी
शाख़ नख़ले आरज़ूकी बार-वर होजायगी ॥
देखना नालों की शोहरत अर्श पर होजायगी ।
वह तो क्या उन्के फ़िरश्तोंको ख़बर होजायगी॥
बे हिजाबाना फिरा करते हो देखो मानलो ।
आँखके पर्देमें आबैठो नज़र होजायगी ॥
शेख़को काबा मुबारक बरहमन को बुतकदा ।
कूए-जानांमें हमारी भी बसर होजायगी ॥
हाले-दिल जाकर सुनाएँगे हमारा यार को ।
यह मेरी आहे रसा ख़ुद नामा-वर होजायगी १६५

ग़ज़ल अमानत ।

ज़ोर है यह ना-तवानीसे फ़िराके यारसे ।
लब मेरे गुफ्तारसे आजिज़ हैं या रफ्तारसे ॥

दौडते हैं नक़द-दिल लेलेके सारे जां फ़रोश ।
तुम गुज़रते हो हो ए-यूसुफ़ लक़ा बाज़ारसे ॥
ग़ैर मुहँ तकते रहे और हमने बोसा लेलिया।
काम बद-मस्तोंका निकला पेश्तर हुशियारसे॥
हूं फ़क़ीरे-बेनवा मिलजाय यक बोसा मुझे ।
आज सदक़ेमें यही ख़ैरात हो सरकारसे ॥
क्या हुवा ग़र होगये वह आजसे पर्दा-नशीं ।
झांकलूंगा मैं तो छिपकर रोज़ने-दीवारसे ॥
जुम्बिशे-अबरूहैकाफ़ी जिसकी क़त्ले-आमको।
क्या ग़रजख़ंजरसेक्या मतलब उसे तलवारसे॥
बज़्ममें मस्तोंका साग़र भर दियाकर गाह गाह।
राह-रस्म होती है अच्छी साक़िया मैख़्वारसे॥
सोज़िशे-दाग़े जिगरके लुत्फ़से वाकिफ़ है दिल
आगकी लज्ज़तको पूछो मुर्ग़े-आतिश-ख़्वारसे॥
चादरे-रहमतसे ढांके मेरे इसियां हश्रमें ।
बस दुआ अपनीअमातनहै यही सत्तारसे १६६

गज़लहक़ीर ।

ए दिले नादां तू घर गैरोंके जाना छोड़दे ।
तुझकोलाज़िम है बुतोंसे दिललगानाछोड़दे॥
दाम जुल्फोंका सितमगर तू बिछानाछोड़दे।
तायरे-दिल आशिक़ोंका तू फँसाना छोड़दे॥
यह तमन्ना है कि वह बरख़ास्ता ख़ातिर न हो।
कुछ नहीं पर्वा मुझे सारा ज़माना छोड़दे ॥
किसक़दरतकलीफ़ पाई इन बुतोंसे ए हक़ीर
यहबहुतहैंबेवफ़ातूदिललगानाछोड़दे १६७॥

गज़लज़फ़र ।

बुत परस्तोंके सिवा यह भेद पाता कौन है।
इनबुतोंमें जल्वा क्याजानैदिखाता कौनहै॥
यह हमीहैं जो लगाकर दिललगादेतेहैं जान ।
इस तरह दिलउससितम-गरसेलगाताकौनहै
इश्क़के रस्तेमें जातेहैं क़दम सबके उखड़ ।
पॉव मेरी तर्हसे अपना जमाता कौनहै ॥

ए ज़फ़र जिस तर्हसेसर-बाज़जाताहैनिडर ।
इसतरहकूचेमेंउसकातिलकेजाताकौनहै १६८

गज़ल ।

मुस्किराते पान खाते ज़ुल्फ़ सुलझाते हुए ।
आतेहैंकिसकिसनज़ाकतसे वःबलखातेहुए॥
वह यकायक बाग़में पहुँचे जो इठलाते हुए ।
कब्क भागे सामनेसे ठोकरें खाते हुए ॥
पावँ थर्राते थे जिनके सामने जाते हुए ।
कासए-सर उनको देखा ठोकरें खाते हुए ॥
वस्लका वादाभी होसकता नहीं ए नाज़नीं ।
मुँह थका जाता है क्या एक़रार फ़रमाते हुए॥
हाय अब क्याकहकेसमझाऊंदिले-बेताबको।
उनसेहमकहतेरहे कहजाव कुछ जाते हुए ॥
बाहरीबेताबिए-दिलयारजबतक आएआए ।
नाले पहुँचे अर्शपर क़स्रे-फ़लकढातेहुए ॥
इश्क़ कहतेहैं जिसे वह मौतका पैग़ाम मैं ।
ऊंगतेको कुछ नहींहै देर सोजातेहुए॥ १६९॥

गज़ल ।

आरजू यह है कि जबतक मेरे दममें दम रहे ।
दिलमें तेरी याद तेरा दर्द तेरा ग़म रहे ॥
यों तो हम वहशतमें चलते फिरतेगोहरदमरहे।
पर हँसीं कोई जहां देखा वहींपर थम रहे ॥
क्या कहेंगे हिज्रके जीनेको गर पूछेंगे वह ।
हमको खुदहैरत है ज़िन्दा किसतरहसेहमरहें ॥
जज्बे-दिल खींचे लिये आताथा मेरेघरउन्हें ।
हायकिस दिलसे उदूने आहकी जो थमरहे ॥
आएहैं किस नाज़से वह खानए-दिलमें मेरे ।
कुछचलेचलकरथमेफिरथोड़ाबढ़करथमरहे॥
खूबजीभरके सतालो जितनाचाहो तुम हमें।
ए सनम् जबतक तुम्हारे हुस्नकाआलमरहे॥
शेख़ साहब पीके यों जामेसे होबाहर न आप।
कुछख़याले-हुर्मते-मैक़िबलए-आलमरहे १७०

वज़न—(११)

मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् मफ़ाइलुन् ।

गज़ल ज़ार ।

(राग विहाग ताल गजल)

कमर चक्कर में आया देखकर रुख़सार जनाका।
हयासे रंग पीला पड़गया महरे-दुरख़शाँका ॥
बशर को साफ़ तस्ख़ीरे-फ़िसूंसे खींच लेते हैं ॥
बुतोंके दिलमें कन्दा इस्मे-आज़महैं सुलेमाँ का॥
इशारेमे गिरे सर सैकड़ो तनसे जुदा होकर ।
असर कुछ आपने देखाभी उन्कीतेग़े बुराँका ॥
तअज्जुब कर न इस्का वहमेरे रोनेपै हँसते हैं ।
हमेशासे रहा है साथ ए दिल बर्कों-बाराँ का ॥
तरीके-नुक्ता-दाँए ज़ार जब उस्ताद हो तेरा ।
चेहकउठ्ठेनक्योंहरशेरबुलबुलबनकेदीवांका १७१

ग़ज़ल सफ़दर ।

तसौवर रोज़ो-शब ख़ातिरमें है गेसू ए-जानाका॥

दिले-सद-चाक शाना बनगया ज़ुल्फ़ेपरेशाँ का॥
तुम्हारी सुर्ख़िए-लबने उडाया रंग हँस २ कर।
हिनाका लालका याक़ूतका ख़ूने-शहीदाँ का ॥
तसौवर आगयाक़ातिलका जब शौक़े-शहादतमें।
रगें गर्दनकी दम भरने लगीं शमशीरे-बुराँका ॥
न फ़ुर्सत वस्लकी दी रातभर उस शोख़ने सफ़दर
कियाहीलासहरतकपानकामिस्सीकाअफ़शांका

गज़ल दाग़।

मज़ा हरएक को ताज़ा मिला है इश्के़-जानाँका।
निगहकोदीदकालबकोफ़ुग़ाँकादिलकोअरमाँका
यः क्या है आज ग़ैरोंसे मेरी तारीफ होती है।
यःक्या है ख़ुदबयाँहोताहैअपनेजौरे-पिनहाँका॥
यः किस्की शर्म-आलूदा निगाहों में तः शोख़ीहै।
सो देखा उसे देखा-इधर ताका उधर झाँका ॥
तेरी आतिश-बयानी दाग़ रोशन है ज़माने में।
पिघलजाताहैमिस्ले-शमअ दिलहरयकसख़ुनदाँका

ग़ज़ल सफ़दर ।

वः जोबन पर जो आएं लुत्फ़ उट्ठे जिन्दगानीका।
अभी घूँघटमें चेहरा है उरूसे नौजवानीका ॥
दिखादे दौर ए-साक़ी शराबे-अर्ग़वानी का ।
कि बक़्फ़ा चन्द-रोज़ा है बहारे ज़िन्दगानीका॥
बहार आई है गुल फूले हैं सब्ज़ा लहलहाता है।
पिला साक़ी कोई साग़र शराबे अर्ग़वानी का॥
कहूं मैं तर्के-मै ख्वारी ज़रा आवज़ खुदासे डर।
यःफ़स्ले-गुलयःजोशे-इश्क़यहआलमजवानीका
न जा सकताहूंमैंसदफ़रनआसकताहैवहयांतक
नज़ाकतकाहैउस्कोउज्रमुझकोना-तवानीका १७४

ग़ज़ल आग़ा ।

बजाए-अश्क मिज्गांपर अगर लख्ते-जिगरहोगा।
तेरा एहसान मेरे हालपर ए चश्मे तर होगा ॥
हमारे सामने कुछ ज़िक्र ग़ैरोंका अगर होगा ।
बशर हैं हम भी साहब देखिये नाहक़काशरहोगा॥

तबीबो तुम हो दीवाने मुझे सौदाए-काकुल हैं ।
अगर सन्दल लगाओगे ज़ियादा दर्दे-सरहोगा॥
तसौवर जुल्फ़का गर छोड़दूं मिज्गाँका ख़टकाहै।
जो सरके दर्द से फ़ुर्सत मिली दर्दे-जिगर होगा ॥
किसीकोकोसते क्यों हो दुआ अपने लिये मांगो।
तुम्हाराफ़ायदाक्याहैजोदुश्मनको ज़ररहोगा ॥
दुशाला शाल कश्मीरी अमीरोंको मुबारक हो ।
गिलीमें-कोहनामें जाड़ा फकीरों का बसर होगा
मज़ा आएगा दीवानोंकी बातोंमें परी-ज़ादो ॥
जोआग़ाकाकिसीदिनदश्ते-मजनूमे गुज़र होगा

ग़ज़ल सफ़दर ।

नगुल-चींहैशफ़ीक़अपना,नमूनिसबाग़बांअपना
यःदोनों होगए दुश्मन,ठिकाना है कहां अपना॥
हमें क्या काम था इस गुलशने-वीरांमें आनेसे।
छोड़ाया आबो-दानाने,क़दीमी आशियांअपना
वः घबराते हैं तनहाईसे हम ग़मसे तड़पते हैं।

अजबआलमहै फ़ुर्क़त में वहां उनका यहांअपना।
शकर-रेज़ी निहायतहै सख़ुनमें अपने ए-सफ़दर॥
बजाहै गरलक़बहोतूतिए-शीरीं-ज़बांअपना १७६

गज़ल लफ़दर।

व:तेग़े-नाज़ या-रब हो रवां आहिस्ता आहिस्ता।
मज़ा लेलेके तड़पैंनीम-जांआहिस्ता आहिस्ता॥
ख़फ़ाभीवह हुएबिगड़े भी बरहमभी हुए लेकिन।
सुनादी हमने सारी दास्तां आहिस्ता आहिस्ता॥
न ऐवाने-फ़रेदूं है न जामे-जम रहा बाक़ी।
मिटे शाहाने-आलमकेनिशांआहिस्ताआहिस्ता
न पायाआजतकज़ालिमनेमुझसासब्रमेंकामिल।
हुए सब आशिक़ोंकेइम्तहांआहिस्ताआहिस्ता
कोई रुसवानहो कुछपासइस्काभीरहे सफ़दर।
शबे-फ़ुर्क़तमेंलाज़िमहैफ़ुग़ांआहिस्ताआहिस्ता॥

गज़ल अमानत।

तुम्हारे हिज्रमें मैं ख़ार खाताहूं गुलिस्तांपर।
मेरी आँखोंको आजाता है रोना अबरे-बारांपर

दुरे दन्दानो-लाले-लबके मज़्मूं तुमने लिक्खे हैं।
जवाहिर या टँके हैं आपके औराक़े-दीवाँपर॥
धड़कताहै कलेजा उन्का और कुछकुछ वःडरतेहैं।
अभीकमसिन हैं आएं किसतरह गंजे-शहीदाँपर॥
तेरी आंखोंके सौदाईकी वहशत बढ़गई दूनी।
नज़र जिसदम पड़ी सहरामेंचश्माने-ग़िज़ालाँपर
लिये हैं रातको ग़ैरोंने बोसे कैसी सख्तीसे।
नुमायां है निशाने-नीलगूँ रुख़सारे-जानाँपर॥
चलै अब दौर ए साक़ी तू भर दे बादए-गुलगूँ।
तरश्शोका हैआलम अब्र छाया है गुलिस्ताँ पर॥
मिले शबभरअमानतकोलबे-लालीनके बोसे।
ज़िहे-क़िस्मत किक़ब्ज़ा होगया मुल्के बदख्शाँपर

गज़ल बासित।

नहीं सिन्दूरका क़श्क़ा जमा अबरूए-जानाँपर।
हमारे खूने-नाहक़का निशाँ है तेग़े-बुर्राँपर॥
लबे लालीन पर छुटकर नहीं यह ज़ुल्फ़ आई है।

चढ़ाई श्यामवालोंकी हुई मुल्के-बदख़्शाँपर ॥
लिये दोचार बोसे हैं जो उस गुलज़ारे-खूबीके ।
नज़ाकतसे गुले सौसन बना रुख़सारे-जानांपर ॥
अगरचे वह परी-रू आए बासित अपनी क़ाबूमें ।
तो हमभी कुछ दिनों शाही करें तख़्ते-सुलेमाँ पर ॥

गज़ल अमानत ।

गुलों पर बुल्बुलें शैदा, फ़िदा कुमरी सनोबर पर ।
हमारा दिल है शैदा लाख दिलसे अपने दिल्बर पर ॥
नहीं है सब्रका यारा न कुछ फ़रयादकी कूबत ।
इधर है पास इस दिलका उधर है ध्यान दिल्बरपर ॥
निगाहोंसे लड़ाकर वह निगह दिल छीनलेते हैं ।
कहांतक सब्र हो मज़लूमको जौरे-सितम्-गर पर ॥
किसे कहते हैं तायब कौन साक़ी तुझसे मुनकिर है
दिलो-जांदीनो-इमाँ है तसद्दुक़ एक साग़र पर ॥
अमानत अम्बरीं ज़ुल्फोंको उनकी किससे निस्बत दूं
ग़िज़ालाने-ख़ुतन मरते हैं उस ज़ुल्फ़े मोअम्बरपर

गज़ल आतिश ।

खुदाबख्शे,सनम् यह कहकेमुझको याद करतेहैं।
दुआए-मग़फ़रत मेरे लिये जल्लाद करते हैं॥
बलाए-जां हैं पुतले ख़ाकके बेदाद करते हैं।
परीको बन्द शीशेमें यः आदम-ज़ाद करते हैं॥
खुदाजाने यःआरायश करेगीक़तलकिस किसको
तलब होता है शाना आइनेको याद करते हैं॥
बुतोंके इश्क़ने आखिर दुखाया दिलको उनकेभी
बरहमन पर्दए नाकूसमें फ़रयाद करते हैं॥
ख़यालेख़त ख़यालेबोस ए-लबमें नहीं रहता।
इबारत भूल जाते हैं जो मतलब याद करते हैं॥
कमर बांधी है गुलचीनोंने ग़ारतपर गुलिस्ताँके।
इजारा बुलबुलोंके खून का सैयाद करते हैं॥
यः शायर है इलाही या मुसौवर-पेशा है कोई॥
नए नक़्शे निराली सूरतें ईजाद करते हैं॥
पहनते हैं कफ़नमैला हुवा जाता है ए आतिश!
सराए-गोर वीराँ है उसे आबाद करते हैं॥१८१॥

गज़ल अमानत ।

ग़ज़बढाते हैं गुलशन्में सितम सैयाद करते हैं।
किकलियां तोडकर बुल्बुलका दिल नाशादकरतेहैं
कहो क्यों नाचते हैं बालों-पर फ़स्ले वहारीमें ।
असीराने क़फस पर क्यों सितम सैयाद करते हैं॥
नहीं बे वजह उनकी देखता रहताहू मैं सूरत ।
हमेशा मुंतज़िर रहताहूं क्या इरशाद करते हैं ॥
जलादेगी हमारी आहे-सोज़ां दममें गर्दूंको ।
हटो अब चर्खके नीचेसे हम फ़रयाद करते हैं॥
अमातनकोपसँदआएभलाक्योंकरतेराकहना।
नसीहतपर अमल बाएके कब आज़ाद करतेहैं॥

गज़ल ।

जवानीकी उमंगें हैं निखरते हैं सँवरते हैं ।
बदन गदरा चला है खुद-बखुद जोबन उभरतेहैं॥
लगाना दिलका उनसेसाफ़ कालोंका खेलानाहै।
नहीं रहते किसीके बलके जब बिखरते हैं ॥

हिनाकी तर्हसे पिसलेते हैं तब रंग लाते हैं ॥
शबाबो-शर्म-दोनोंका असर दिलमें जो पाते हैं।
सवाले-वस्लपर अँगड़ाई लेकर मुस्कराते हैं ॥
निगाहोंकी तरह वह शोख़ फिरताहै जोमहफ़िलमें
कफ़े-पाके तले मह्वूबे-जमाल आंखें बिछातेहैं ॥
मज़ा उन्की तबीअतमें है गुस्सा आ नहीं सक्ता।
सवाले-वस्लपर त्योरी चढ़ाकर मुस्कराते हैं ॥
सहरको दरपै जाता हूं तो फ़र्माते हैं अन्दरसे ।
अभी सोकर उठेहैं,हाथ मुँह धोतेहैं आतेहैं १८९

गज़ल हैरत।

कभी मेंहदी छुड़ातेहैं कभी मिस्सी लगाते हैं ।
हमारे पास आनेमें वः क्या क्या रंगलाते हैं ॥
ज़मानेकी दुरंगीका असर है और क्या समझें ।
उन्हें हम याद करते हैं वः हमको भूल जाते हैं ॥
ख़बर इस्की नहीं सरपर ख़िज़ाके दिनभी आतेहैं।

चमनमें गिर्यए-शबनमपै गुंचे मुस्कराते हैं ॥
सुये-गोरे-ग़रीबां जब कभी भूलेसे जाते हैं।
बजाए-चादरे-गुल क़ब्रपर त्योरी चढ़ाते हैं ॥
जो फर्मातेहैं क्यों रोतेहो हैरत! तब यः कहताहूं।
तुम्हारी आतिशे-फ़ुरक़तको अश्कोंसे बुझातेहैं८६

गज़ल शंकर ।

शहे-उश्शाकहैं हम ढंग अपने कुछ निराले हैं।
यहां दौडे चले आते हैं जितने हुस्नवाले हैं ॥
नहीं हैं सुर्मगीं आँखैं तुम्हारी ए शहे-खूबी ! ।
हलाहलके भरे मेरेलिये यह दो पियाले हैं !! ॥
अबस तिरछी नज़र करते होक्यों त्योरीबदलतेहो
यःअपने हज़रते-दिल तो तुम्हारेही हवाले हैं ॥
नज़र आने लगे तुमको तमाशा मुर्गे-बिस्मिलका
जो सचपूंछोतो हम दिलको बहुत अपनेसँभालेहैं
मचल जातेथे सूरत देखकर हरदम हसीनोंकी ।
इसीसे हज़्रते-दिल आजसे उन्के हवाले हैं ॥

वःबोले वस्लकी शब रहम खाकर तुमनेए शंकर।
बडीमुश्किलसे अरमानेदिलेमुज़्तर निकाले हैं १८७

गज़ल अमानत।

चढ़ाए आज वह अबरूए-ख़म्दार बैठे हैं।
हमारे ख़ूनकी प्यासी लिये तलवार बैठे हैं॥
तअज्जुब क्या जो उन्की बज़्ममें अग़यार बैठेहैं।
चमनको देख लो पहलूए-गुलमें ख़ार बैठे हैं॥
तसद्दुक़ हुस्नका मिलजाय हमको ए शहे-ख़ूबां।
गदाए-दर हैं बहरे-न्यामते-दीदार बैठे हैं॥
सवाले-बोसा है शाहे-हँसीं अब लेके जाएँगे।
फ़क़ीरे-बेनवा हैं दरपै आसन मार बैठे हैं॥
कभी तो भर दिया कर जामइनका बज़्ममें साक़ी
लगाए ताक मीनासे तेरे मे ख्वार बैठे हैं॥
यः दिन इशरतके हैं मतलब हमें परहेज़गारीसे।
बहार आई है मैख्वारीको वादा-ख्वार बैठे हैं॥
यःआरायश तो शबभर वस्लसे महरूम रक्खेगी

बनानेको वः अपनी गेसुए-खम्दार बैठे हैं ॥
नहीं लहरातीहैं ज़ुल्फ़ें यः उन्केरूये-ताबांपर ।
हिफ़ाज़तको दफ़ीनै-हुस्नके दो मार बैठे हैं ॥
हमारी आँखको उल्फ़त हुईहैउन्कीआंखोंसे ।
किसीकी नर्गिसी बीमारके बीमार बैठे हैं ॥
बयानेमें दिया है नक्द-दिल एवज़में जांदेंगे।
ख़रीदारीको यूसुफ़की सरे-बाज़ार बैठे हैं ॥
इशारागाहेचितवनकागहेजुम्बिशहैअबरूकी।
सिनाँ ताने हुए बांधे हुए तलवार बैठे हैं ॥
भँवरमें पड़गई है किश्तिए-उम्रे-खांअपनी।
मदद या हज़रते इलयासाहम मंझधारबैठेहैं॥
शबे-फ़ुरक़तमेंतनहाईकाग़मक्याहोअमानत को
अलमअन्दोहो-हसरतमूनिसो-ग़मख्वारबैठे हैं ॥

गज़ल ।

फ़लक़देताहैजिनकोऐशउनकोग़मभीहोते हैं।
जहांबजतेहैं नक्क़ारे वहां मातम भी होतेहैं॥

बजाहिर रहनुमा हैं और दिलमें बद गुमानी है।
तेरे कूचेमें जो जाता है आगे हम भी होते हैं॥
गिलेशिकवेकहांतक होंगेआधीरातजोगुज़री।
परेशां तुम भी होते हो परेशां हम भी होते हैं॥
हमारे आंसुओंकी आबदारी औरहीकुछ है।
कियोंहोनेकोरोशनगौहरे-शबनमभीहोतेहैं१८९

गज़ल अमानत।

घटाते हैं उदूकी और मेरी तौक़ीर करतेहैं।
अता वह अपने कूचेकीमुझे जागीरकरतेहैं॥
हुवाहैकाबए-दिलमें निगाहोंका असर कैसे।
खुदाके घरमें गर क्योंकर बुते-बेपीर करतेहैं॥
वः रोबेहुस्न छाजाताहै कुछकहतेनहींबनता।
मुक़ाबिलमें जोउनसेहमकभीतकरीरकरतेहैं॥
बुताने-संगदिलकोमोमकरलेवेंगेपिघलाकर।
अभी हमदिलसेअपनेआहे-पुर-तासीरकरतेहैं
अमानतजब्तकरकरहमजलादेतेहैंआहोंको
दिले-बेताबकोखुदमारकरअकसीरकरतेहैं१९०

गज़ल ।

नहीं अर्सा चले जाना, बस इतने देर दम लेलो।
निकलजाने दो दमतनसे, जोरोकैंफिरकसमलेलो।
चले जाना चले जाना, न रोकैंगे न रोकैंगे ।
घडीभर तो जरा ठहरोअभी आएहो दमलेलो ॥
अहदतक अपनीए-यारो ! मैं हाथोंहाथजापहुंचूं ।
जनाज़ादोशपर मेरा, जोतुमदोदो कदम लेलो ॥
दियामुज्दामेरे दिलने किग़शसे होशमें आओ ।
पयामे-खत अभीआयाहैकासिदकेक़दमलेलो ॥
दिल अपना बेचताहूं ए-हसीनो ! एक बोसेपर ।
तुम्हेंलेनाहो गर लेलो, बहुतकीमाहैकमलेलो ॥

गज़ल जफ़र।

खुदा जाने निगाहोंमें बुतो क्या काम करते हो ।
नज़र जिस वक्ततुमकरतेहो क़त्ले-आमकरतेहो॥
जो भरकर आह उन्का नाम लेता हूं तोकहतेहैं।
जताकर इश्क अपनाक्यों मुझे बदनामकरतेहो॥

जुदाईमें हमारी यहां बेताब फिरते हैं।
पडे वाँ बिस्तरे-राहतपै तुम आराम करते हो॥
नसीहतकरते हो क्योंपुख्ता-मग्ज़ाने-जुनूंकोतुम।
यःक्याए-हज़रते-नासह!ख्यालेख़ाम करतेहो॥
ज़फ़रउसतुन्द-खूबेबोसए-लब मांगतेहो क्या।
मगर इस पर्दामें कोईतलबदुश्नामकरतेहो १९२॥

गज़ल शरफ़।

चखादो चाशनीए-शर्बते-दीदार थोड़ीसी।
दमे-आखिर तो करदोखातिरे-बीमार थोडीसी॥
अगरफ़ुर्सत मिलीहो गैरकी बातोंके सुननेसे।
हमारीअर्ज़भी सुनलीजिये सर्कार थोडीसी॥
ठहरजा ए-अजलऔरउनकोदमभर देखलेनेदे।
अभी बाक़ीहै दिलमें हसरतें दीदार थोडीसी॥
तअम्मुल सर झुकानेमेंकियाकबमैंने ए-क़ातिल।
निकलकरम्यानसेक्योंरहगईतलवारथोडीसी॥
तमन्नाहै कि जीतेजी बना लेता मैं कब्र अपनी।
अगरमिलतीज़मीने-कूचए-दिल्दारथोडीसी१९३

गज़ल आग़ा ।

क़द-दिल्दारको बांधा अजब मज्मूने-आलीसे ।
हुवा दम बन्द मानीका मेरी नाज़ुक-ख़यालीसे ॥
मेरे दुश्मनकोभी सदमा न पहुँचे रंजे-फ़ुर्क़तका ।
उदूका खेतभी बचजाय या रब पाय-मालीसे ॥
नमूना है खुदाकी शानका पत्थर पसीजे हैं ।
बुतोंको रहम आयाहै हमारी ज़र नालीसे ॥
न आएगी हमारे हाथ क्योंकर हमभी शायरहैं ।
कमरको बांधतेहैं आज मज्मूने-खयालीसे ॥
सिफ़त लिखताहूं आग़ा अबरुए-ख़म्दारजानांकी
मेरे अशआर लड़जाएंगे दीवाने-हिलालीसे १९४ ॥

गज़ल अमानत लखनवी ।

शबे-फ़ुर्क़तमें नालोंने जहां सरपर उठाया है ।
ज़मींको ज़ल्ज़लाहै आस्माँ चक्करमें आया है ॥
हिसाबे आबो-दाना हश्रमें होगा तो कहदूंगा ।
पियाहै उम्र भर खूने, जिगर ग़म मैंने खायाहै ॥

अर्या सिन्दूरका टीका नहीं महरावे-अबरूमें ।
चिराग़ इस शमअ-रूने ऐन काबेमें जलाया है॥
नहीं बे-वजहपै हम हिचकियां आती हैं फ़ुर्क़तमें ।
किसी महबूबकोतूए अमानतयादआयाहै १९

गज़ल तस्लीम ।

इरादा क़त्लमें रह रहके क़ातिलका बदलताहै।
कभी तलवार खिंचती है कभीखंजर निकलताहै॥
जुदाई में जो मुँहपर नालए सोज़ां निकलताहै।
बुतोंका दिलभी कोई चीज है पत्थर पिघलताहै
जिगरहो दिलहो सीनेमें मुक़र्रर कोई जलता है।
कि जिसदम सांस लेताहूं धुवाँ मुँहसे निकलताहै
किसीका हाथ रखना बहरे-तस्कीं याद है इस्को।
दिले बेताब इसीसे हिज्रमें बाँसों उछलता है॥
खुदाने आशिक़ो-माशूक़में रक्खाहै फ़र्क़ इतना।
कोई दम तोड़ताहै औरकिसीका दमनिकलताहै
दिले-दीवाना फ़ुर्क़तमें बहुत बेचैन रहता है।

न समझाए समझता है न बहलाए बहलताहै॥
तबीअतसे मैं हूं मजबूर वरना ज़ोफ़के बाइस।
किसीका नाज़ उठानाभी मुझेतस्लीम खलताहै

गज़ल रेंहां।

दिलों में कहने सुननेसे अदावत आही जातीहै।
सफाई लाखहो लेकिन कुदूरत आही जातीहै॥
दिले रंजीदा कहताहै न बोलूं यारसे लेकिन्।
जब आँखें चार होती हैं मुरौवत आही जातीहै॥
नहीं मौकूफ सिनपर देखकर सूरत हसीनोंकी।
जवानो-पीर दोनोंकी तबीअत आही जातीहै॥
जब उनको देखतेहैं गैरसे हस बोलते हँसते।
नहीं कुछ वास्ता लेकिन हरारत आही जातीहै॥
खुदा मेहनत किसीकी रायगां हर्गिज नहीं करता
कभी अहले-हुनरके हाथ दौलत आही जातीहै॥
बराबर दोस्ती निभते न देखी हमने दुनियामें।
किसी ढबसे कभी रंजिशकी सूरत आही जातीहै॥

किसीकीताबो-ताक़तक्याजोबचजाएमुहब्बतसे।
अग़र आनेको होतीहै यः शामत आही जातीहै
छिपाएसे नहीं छिपताहै रैहां नक़शए-उल्फ़त।
ज़रूर आंखोंमें कुछ इस मैकी रंगत आहीजातीहै॥

गजल अमानत।

हसीनाने-जहांतुमपर तबीअत आही जातीहै ॥
पसन्द हर एक के अच्छीसी सूरत आही जातीहै।
तुम्हें जब गर्म-सोहबत देखलेताहूं रक़ीबोंसे।
जलन होती है इसदिलमें हरारत आही जातीहै॥
शबाबे-उम्रमें जोबन हसीनोंका निखरता है।
"समरजिसवक्तगदराताहै रंगत आहीजातीहै"॥
गिला क्या दूबदू उनसे करैं पासे-मुहब्बत है।
शिकायत मुँहपै करनेसे मुरौवत आही जातीहै॥
ग़रूरे हुस्नसे वह कब ज़मीं पर पांव रखते हैं।
खुदा दौलत जो देताहै.तो नख़बत आहीजातीहै॥
सरे बाजार उस यूसुफ़-लकाको देख लेते हैं।

किसीदिनराहपरअपनीभीक़िस्मत आहीजातीहै।
मिलाकरतेहैं नक्दे-दागे दिल हरएकआशिक़को॥
यः सर्कारे-जुनूसे हाथ दौलत आही जाती है ॥
जो वह रश्के मसीहा पाससे जाताहै दमभरको।
लबों पर जान बीमारे-मुहब्बत आही जातीहै ॥
फ़रोगे शमअ होताहै तो मर मिटता है परवाना।
तुलूए-हुस्न होनेपर तबीअत आही जातीहै ॥
अदा ओ-नाज़ गुल-रूयोंके हरदम हश्र ढातेहैं ।
सदा पायलकी सुननेसे क़यामत आही जातीहै॥
तुफ़ैले-हज़रते-उस्ताद सब कहते हैं हम सोहबत।
तेरे अशआरमें अकसर फ़साहत आही जातीहै ॥
रक़ीबे-रूसिया टोका गया मैं बज़्ममें पहुँचा ।
शिनासाईभीयकदिनकम अमानतआहीजतीहै

गज़ल नसीरहुसेन।

हुई उस यारसे हमसे जो इन रोज़ों लड़ाई है।
फ़लकने हाय मुझपर यह बला कैसी गिराई है॥

खफ़ा क्यों होगए हमसे खता क्या होगई हमसे।
बदलकर आंखको गुस्सेसे क्यों त्योरी चढाई है॥
शिकायत जुलमकी तेरे करूं क्या ओ-बुते-काफ़िर।
दोहाई है दोहाई है दोहाई है दोहाई है॥
हुवा इन्कार जो तुमको हमे बोसेके देनेसे।
हम अपनी जान दे देंगे यही दिलमें समाई है॥
ज़रासी बातमें मुद्दतकी उल्फ़त तर्क करतेहो।
अरे साहब! तुम्हारे दिलमें यह कैसी समाई है॥
हमारी शक्ल ग़म्गीं देखकर यह लोग कहतेहैं।
अजी रोतेहो क्यों साहब! सज़ा उल्फ़तकी पाई है॥
तसद्दुक़ तुमपै करताहूं मैं अपनी जाने-शीरींको।
यही दौलत यही हश्मत यही मेरी कमाई है॥
तसौवरमें तुम्हारे अब चली जाने-हज़ीं नसरत।
मददको या अली आओ, दमे मुश्किल कुशाईहै

गज़ल।

सुना है उनको मनजूरे-नज़र तेग़-आज़माई है।

यहां शौक़े-शहादतने मेरी गर्दन झुकाई है ॥
अरे ओ-बेवफ़ा जबसे तबीअत तुझपै आई है।
बशाए-रूह क़ालिबमें तेरी उल्फ़त समाई है ॥
लहू बहताहै आंखोंसे ख़्याले तेग़े अबरूमें।
दिले नादाँ ने मेरे हाय क्या तलवार खाई है ॥
गया गोरे-ग़रीबांपर वः जिसदम फ़ित्नए महशर
जहाँमें गुल हुआ उट्ठो क़यामत सरपै आई है॥
सरे-मरक़द जो आते हैं तो कहते हैं ख़ुदा बख़्शे।
हमारे इश्क़में इसने बडी ज़िल्लत उठाई है२००॥

ग़ज़ल ।

ख़ुदाने उस परीकी नूरकी सूरत बनाई है।
फ़िसलतीहै निगह अपनी यःआरिज़कीसफ़ाईहै
नहीं हैं बाल चोटीके गुले-रुख़सार जानां पर।
तमाशाहै गुलिस्तां में घटा घनघोर छाई है ॥
सबब खुलता नहीं आज़ुर्दगी का सख़्त हैरां हूं।
उतारेंगे किसे नज़रोंसे क्यों त्योरी चढ़ाई है ॥

लिये जातीहैफिर बेताबिए-दिल खींचकरमुझको।
क़सम नाहक़ दरे-माशूक़पर जानेकी खाई है॥
मिलाहै बोसएरूखआशिक़ोंको ख़त निकलनेपर।
हुईहै शाम उजरत तेरे मज़दूरोंने पाई है॥२०१॥

गज़ल अमीर मीनाई।

कुदूरत अपने दिलसे वक्ते-दफ़ उसने निकाली है।
मेरी गुस्ताख़ियों पर देके मिट्टी ख़ाक डाली है॥
खुदा के सामने बुतबनके बैठा है वः महशर में।
अगर चलजाय यह फ़िकरा तोबातअच्छीनिकालीहै
वःज़ुल्फ़ आई जो चेहरेपर तोझुंझलाके कह हटभी
बडी मुँहँ चूमनेवाली बलाएं लेनेवाली है॥
परी भी बचके निकले ज़ुल्डसेतेरी नहींमुम्किन्।
यःनागिनलम्बीचोटीवालीउडकरडसनेवालीहै।
बताऊं क्या **अमीर** उसबाग़काआलम जहाँमैंहूं।
ख़िज़ांगुलचींहैबिजलीफूल बादे-तुन्दमालीहै॥

गृज़ल ।

नज़रकी चोट कब दिल की नज़ाकत सहनेवाली है ।
न ठेस इसमें लगे साक़ी बडी नाज़ुक पियाली है॥
बनाएं आशियां क्योंकर लदी फूलों से डाली है ।
ब-मुश्किल पावँ रखनेकी जगह हमने निकाली है॥
सरे-महफ़िल दिखाकर आंख दिलको छीन लेते हैं।
हसीनोंने यः रस्मे-दिल-बरी अच्छी निकाली है॥
लिये बैठे रहो अपने लिये तुम आरसी आपनी ।
खुशामद-खोरी मुँह-देखी हमारी देखी-भाली है॥
तुम्हें मद्दे-नज़र, क्या है जो दुम्बाला निकाला है।
सिरोही आज किस्के क़त्ल करने को निकाली है॥
किसी सूरत शबे-फ़ुर्क़त मेरी काटे नहीं कटती ।
यः कबकी दुश्मनी ए-आसमाँ तूने निकाली है॥
व-झुँझलाना किसीका चाहसे मुँह चूमलेने पर ।
व:फ़र्माना हटो भी वाह क्या चाहत निकाली है॥
शफ़क़का खून होता है हिनाको आग लगती है ।

ग़ज़बकी ए-मेरे क़ातिल तेरे होठोंकी लाली हैं ॥
गुले रुख़सारो-चश्मे-नर्गिसीका वस्फ़ है इस्में ।
ग़ज़ल मेरीहै गुलदस्तेमें या फूलोंकीडालीहै२०३

ग़ज़ल ।

किसीकी चालने मह्शरमेंयकहलचलसी डालीहै
क़यामतहै क़यामत पर क़यामत आनेवालीहै ॥
सितम है वह भरी महफ़िल में बैठे मुस्कराते हैं।
इलाही खै़र किस्पर आज बिजलीगिरनेवालीहै॥
तुम्हीं पहलूमें आ बैठो तुम्हीको दिल समझते हैं ।
यहांअबदिलकहांदिलकीजगहबरसोंसेख़ालीहै॥
भरे मै के पियाले ग़ैरने पाए तेरे हाथों ।
मेरीक़िस्मतमेंसाक़ी यकपियालीवहभीखालीहै॥
नहींहै मै तो कुछ तलछटही भर दे इस्में ए-साक़ी।
अभी तो देखे ज़ालिम जाम मेरा कितना ख़ालीहै
मेरी मस्ती भी बाएज़ होशियारी से नहीं ख़ाली।
ख़याले-तोबा दिलमें हाथमें मैकी पियाली है॥

ख़ुदा जाने यः कैसा रंग मानी ने भरा इस्में ।
कितस्वीरउनकीकुछउनसेभीबढकरभोलीभालीहै

गज़ल ।

सहरको गोरी शबको सांवली मालूम होती है ।
ज़मानेकी भी रंगत क्या भली मालूम होती है॥
रुख़े-रोशन पै झुक आए हैं जिसदम गेसुए-शबगूं।
सहर और शाम आपसमें मिली मालूम होतीहै॥
हुई तिर्छी नज़र औरउसनेलेलीजानआशिक़की।
क़ज़ाभी उनकी आंखोंसे मिली मालूम होतीहै॥
ग़ज़बकेवक्त क्या आलम कहूं मैं उनकीबीनीका ।
भरी बन्दूक़ गोया दो नली मालूम होती है ॥
शिकमकी तेरी सेली दिल किसीका मार बैठेगी।
मुझे कुर्तीमें नागिन सी पली मालूम होती है ॥
बरसना अब्रका गाना मलारें गुलअज़ारोंका ।
मुझे बरसातही सबसे भली मालूम होती है ॥
दुआए झूमकर क्यों देरहे हैं रिन्द साक़ीको ।

पियाली मै की महफ़िलमें चली मालूम होतीहै॥
बशरमें ऐब लाखों पास रहनेंसे निकलते हैं।
मोहब्बत दूरहीकी कुछ भली मालूम होतीहै२०५

गज़ल आगा।

मज़ाहै इम्तहांका आज़मा ले जिसका जी चाहे।
नमकज़ख्मे-जिगरपरऔरडालेजिसकाजीचाहे॥
अगर है हुस्नका दावा महा-खुरशेद दोनोंमें।
क़फे-पासे तुम्हारे मुँह मिलाले जिसका जी चाहे॥
अगर है ज़िन्दगी बाक़ीतो हमहसरतनिकालेंगे।
दिले-पुर-आरज़ूपर-खाक डाले जिसकाजीचाहे॥
किसीको हालपर अपने कभी तो रहम आएगा।
योंहीं बरसों हमें फ़िक्रोंमेंटालैजिसका जीचाहे॥
जो रोशन-दिलहैंउनकीरोशनीछिपतीनहींहर्गिज़
महे तांबांपै साहब खाक़ डाले जिसका जी चाहे॥
जबांसे उफ़ न निकलेगी दिया है ज़ब्तखालिक़ने।
मिसाले शमअहमकोभीजलालेजिसकाजीचाहे॥

शबे-महताब है कोठे पै तनहा कोई क्यों सोए ।
बुलाकर पास आग़ाकोसुलालेजिस्काजीचाहे॥

ग़ज़ल सफ़दर ।

ज़फ़ासे मुँहु न फेरैंगे सताले जिसका जी चाहे ।
वफ़ा-दारीमें हमको आज़माले जिसका जीचाहे॥
में दिलको हाथसे लेकर हसीनोंसे यः कहताहूं ।
यः तूती बोलता लायाहूं पाले जिसकाजीचाहे॥
हसीनोंके बराबर रखदिया है नक्द दिल हमने ।
नहीं कुछ काम अब हमको उठाले जिसका० ॥
मेरे काबूमें आकर किस मजेसे वह यः कहतेहैं ।
हँसाले जिसका जी चाहे रुलाले जिसका० ॥
कभी मानिन्द गौहर आबरू सफ़दर नजाएगी।
ब-जाहिर खाकमेंमुझको मिलालेजिसका जी चाहे

ग़ज़ल श्याम ।

किये तेगे-निगाहे-लुत्फ़से टुकडे मेरे दिलके ।
नए अन्दाज़से मारा मुझे सदके मै क़ातिलके ॥

लगैंगे होठोंसे उस मस्तके सागर मेरी गिलके ।
लबे-जां-बख्शके बोसे मिलैंगे खाकमें मिलके ॥
बहार आई है गुलशनमें नहीं फूले समाते गुल ।
सदा आतीहै हर-जानिब चहकनेकीअनादिलके॥
न छूटै मै कशी बादे-फना भी ए खुदा मुझसे ।
पसे-मुर्दन बनाए जायँ पैमाने मेरी गिलके ॥
शबे-हिजरां तू कबतकश्यामको रंजो-अलमदेगी।
किसीदिनवहभीहोगाशादउसबुतकेगलेमिलके॥

गज़ल आगा ।

हमारे हर दहाने-ज़ख्मसे कातिल दुआ निकले ।
नमकज़ख्मोंपैतूछिड़के तोउलफ़तकामज़ानिकले
खिलाफे-अक्लहै साहबनहींमुम्किननहींमुम्किन ।
मुरक्कामें जहांकेकोई तुमसा दूसरा निकले ॥
मकांखाली नज़रआताहैरौनिक उठगईबिल्कुल।
हिरमसे ए बुतोजिसदिनसेतुमनामेखुदानिकले ॥
किसीकी जुल्फको मैंने छुवा होतो कसम लेलो।

तहे शमशीर सर रखदूं अगर मेरीख़ता निकले ॥
तअज्जुब हर बशरको है यः मैख़ानोमें चर्चा है ।
किवक्तेइम्तहांआग़ा निहायत पारसानिकले ॥

ग़ज़लशिकोह ।

नहींका अबनहींहै वक्त दो बोसा कि जाँनिकले । दमे आख़िर है इसदम तो सितमगर मुँहसे हाँ निकले ॥ इधर होकर जो वह निकले तो कहते हैं रक़ीबोंसे । चलेथे किस्के घरको भूलकर लो हम कहाँनिकले॥ जो कल क़ातिलनेअपने आशिकों का जायज़ादेखा । करोडों उस्में बेदमथे हज़ारों नीम-जाँनिकले॥बहुत कुछ आपग़ैरोंमें हमें बातें सुनातेहैं । कभीमुँहसे हमारे भी न कुछ ए मेहरबाँ निकले॥कोई मुश्फ़िक़ नज़र पड़ता न था जब दिन निकम्मेथे । अब आए अपने अच्छे दिन हज़ारों मेहरबां निकले ॥ २१० ॥

गज़ल सफ़दर ।

लगादीहै झडी सावन की अपना अश्क़-बारीने।
दिखादी है चमक बिजलीकी दिलकी बे-क़रारीने।
चमन में धूमहैगुलगश्ते-गुलशन को वः आएंगे।
ख़बरदीहै यः हमको क़ासिदे-बादे-बहारीने ॥
अजब शाने-ख़ुदाहैउस बुते-काफ़िरकोरह्मआया।
किया पत्थरका दिल पानी हमारीआहोज़ारीने॥
हमारी आबरू क्या हो हसीनों की निगाहोंमें।
मिलाया ख़ाक़में हमको हमारी ख़ाकसारीने ॥
व आएभी गएभीऔरनकुछकहनेदियासफ़दर।
वफ़ूरे[1]-अश्क़-बारी ने कमाले-बे-क़रारीने॥२११॥
मुक़ाबिल में तेरे क्या मुँहँ है कोई दूसरा ठहरे।
तेरे बन्दे तेरे मोहताज सब शाहो-गदा ठहरे॥
हमारे क़त्लका बाइस फ़क़त हुक्मे-क़ज़ाठहरे।

---

१ बहुतायत, आधिक्यता।

न खंजरको लगे धब्बा न क़ातिलकी ख़ता ठहरे॥
मसीहाई अगर मंजूर है मेरे मसीहाको।
फ़क़त उन्नाबे-लब बीमारे फ़ुर्क़त की दवा ठहरे॥
अयादतके लिये तशरीफ़ लाएं तो इनायत है।
मरीज़े-हिज्र को ख़ाके-क़दम ख़ाके शफ़ा ठहरे॥
हक़ीक़त खुलगई जिस्दम दुईका उठगया पर्दा।
न वह हमसे जुदाठहरे न हम उनसे जुदा ठहरे॥
सुरूरे-मै की कैफ़ीयत छिपानेसे नहीं छिपती।
नहीं मुम्किन कि शीशे के दहनमें क़हक़हाठहरे॥
वः कहते हैं मए-गुलरंग आग़ा क्यों नहीं पीते।
बड़े वह मुत्तक़ी ठहरे बडे वह पारसा ठहरे२१२॥

गज़ल दाग़।

मेरे कूचेमें वह किन शाख़ियोंसे जा-बजा ठहरे।
बढ़े,बढ़कर थमे,दम भरचले, चलकर ज़राठहरे॥
तग़ाफ़ुल की न ठहरे आज क़ातिल फ़ैसला ठहरे।
नहीं;तलवार तो फ़िक़रा कोई चढ़ता हुवा ठहरे॥

मताए-शौक़ भी है मायए-उल्फ़त भी रखते हैं।
अगर लीजे तो कुछ सौदा हमारा आपका ठहरे॥
तसल्ली दिलको देते हैं यः कैसे लोग हैं या रब।
जिगरही जब न ठहरे तो जिगरपर हाथ क्या ठहरे
तहे ख़ंजर भी मुँहमोरा न क़ातिलकी अताअतसे।
तड़पने को कहा तड़पे ठहरने को कहा ठहरे॥
मसीहो-ख़िज्र गो यकताहैं दोनों हमतो जब जानैं।
जो दिल गिरता हुवासँभलै जोदमजाताहुवाठहरे
मज़ाचक्खानहींदुनियाका ज़ाहिदतूनेदुनियामें।
कभीतोबादा-नोशीकीभी ए-मर्दे ख़ुदाठहरे २१३

वजन—(२१)

"फ़ऊल फेलुन् फ़ऊल फेलुन्, फ़ऊल फ़ेलुन् फ़ऊल फेलुन"

गज़ल अंजुमन।

(ध्वनि सिंधु काफी ताल कव्वाली,)

सितम की आंखों से किसने देखा,
अदासे किसनें जिगरको ताका।

हुवा है सीनेसे पार मेरे,
यः तीरे-आफ़त हैं किसबलाका ॥
हुवा मोयस्सर भी वस्ल उस्का,
तो खोया जाहिदने वायक़िस्मत ।
सहर के पहले पुकार उट्ठा,
न खौफ़ आया उसे खुदाका ॥
यः रंग वादेकी शब वः लाए,
कि मेंहदी पावोंमें मलके बैठे ।
उन्हैं था मंजूर खूं हमारा,
फ़क़त बहाना था यक हिनाका ॥
तुम्हारा शिकवा है बेवफाई,
हमारा पेशा है जान-बाज़ी ।
किया जो तुमने वः सब है ज़ेबा,
नहीं है शिकवा मुझे जफ़ाका ॥२१४ ॥

गज़ल सफ़दर ।

सफ़रमें आकर कभी इन आंखोंने रूए-अहले वतन न देखा।कफ़समें ऐसे हुए मुक़ैयद कि ख्वाब-

में भी चमन न देखा ॥ निगाह तिर्छी कुलाह तिर्छी रविशहै तिर्छी अदाहै तिर्छी । जो बांकपन हमने तुममें देखा किसीमें यह बांकपन न देखा॥ फिरे ज़मानेमें मुद्दतों हम रही हसीनोंसे हमको सोहबत । किसीकी ऐसी अदा न पाई किसीमें यह बांकपन न देखा ॥ दहन है गुंचा तो आंख नर्गिस जो जुल्फ़ सम्बुल तो सर्व क़ामत । तुम्हैं तो देखा बलासे हमने जो फ़स्ले-गुलमें चमन न देखा ॥ २१८ ॥

गजल सफ़दर ।

खुदाए-आलम रहे-रज़ामें वःदिल वःहिम्मत मुझे अताकर। छुरीके नीचे करूंमैं सिजदा क़ल-मके मानिंद सर झुकाकर ॥ कहाथा बुल्बुलसे हाल मैंने तेरे सितमका बहुत छिपाकर। किसने उनको ख़बर सुनाई कि हँस पड़े फूल खिलखि-लाकर॥कभी रुकावट कभी खिंचावट कभी है झिड़की कभी है गाली।बड़ी बलाओंमें मुब्तिल

हूं मैं इन हसीनोंसे दिललगाकर ॥ हमेशाकी जिनकी खै़रख्वाही वही हुए दरपए तबाही। मुकामे-इन्साफ़ है इलाही बुतोंमें और मुझमें फैसलाकर ॥ नमाज़में भी है फ़िक्रे-दुनिया किधर है-तेरा ख़याल सफ़दर। खुदा-परस्तीमे बुत-परस्ती खुदा खुदा कर खुदा खुदा कर२१६॥

गज़ल।

बग़लमें उन्को सुला चुके हैं,
हम अपनी क़िस्मत जगा चुके हैं।
मुरादे-दिल जोथी पाचुके हैं,
मजे़ हैं जितने उड़ा चुके हैं॥
करेंगे दिन वस्लका मुकर्रर,
वः या खुद आएंगे दौड़ घरपर।
कि रात मेरी बग़लमें सोकर,
मज़ा जवानीका पाचुके हैं॥
पलक झपकतेही फिर जो चौंका,

तो देखताहूं अजब तमाशा ।
बग़लमें शोख़ीसे रखके तकिया,
वः अपने घर उठके जा चुके हैं ॥
मैं जाऊं क्योंकर नहीं है ताक़त,
अजीब हम्दम मुझे है हैरत ।
इधर तक़ाज़ाये-शौक़े वस्लत,
उधर वः मेंहदी लगाचुके हैं ॥ २१७ ॥

गज़ल सफ़दर ।

दिलो-जिगर खून होचुके हैं हवास तक अपने जा चुकेहैं।वही मुहब्बतका हौसिला है हज़ार सदमें उठा चुके हैं॥यकीं है अब रह्मपर वः आएं सितम किये हैं कमाल मुझपर। सता चुके हैं रुलाचुके हैं दिलो जिगर को जला चुके हैं ॥ कभी मज़म्मत न होगी वाअज़ शराबे-गुलगूंके मैं-कशोंसे । जबांसे उस्का बुरा कहें क्या जिसे कि मुँहँ हम लगा चुके-हैं॥सुकद्दर अपना है खुफ्ता कबसे कहांहै उम्मेद

अब कि चौंके।तड़पके चिल्लाके शोर करके बहुत
इसेहम जगा चुकेहैं॥चमनसे गुल तोड़नातो कैसा
यही है सफ़दर बहुत ग़नीमत।कि दामन उलझा
जो ख़ारसे था ब-मुश्किल उस्को छुड़ा चुके हैं॥

गज़ल आगा।

नमाज़ कैसी कहांका रोज़ा,
अभी, मैं शग़ले-शराबमें हूं।
खुदाकी याद आए किस तरहसे,
बुतोंके क़हरो इताबमें हूं॥
शराबका शग्ल हो रहा है,
बगलमें पाता हूं मैं किसीको।
मैं जागता हूं कि सो रहा हूं॥
ख़यालमें हूं कि ख़्वाबमें हूं॥
न छेड़ इस वक्त मुझको ज़ाहिद,
नहीं यः मौक़ा है गुफ्तगूका।
सवार जाता है वह शराबी,

मैं हाज़िर उसकी रकाबमें हूं ॥
कभी शराबी .कभी नामाज़ी,
कभी हूं मैं रिन्द गाहे ज़ाहिद ।
खुदाका डर है बुतोंका खटका,
अजब तहरके इज़ाबमें हूं ॥
क़यामत आनेका खौफ़ कैसा,
तरद्दुदो-फ़िक्र क्या है आग़ा ।
हिसाब क्या कोई मुझसे लेगा,
बता तो मैं किस हिसाबमें हूं ॥ २१९ ॥

गज़ल ।

नहीं है बे यार लुत्फ़ साक़ी
शराब हम लेके क्या करेंगे ।
जिगर तलक भुनरहा है ग़म में,
कबाब हम लेके क्या करें गे ॥
जवाबे-नामा अगर लिखे वह,
तो नामा-बर उससे साफ़ कहना ।

तुझे बुलायाहै ओ-सितम्-गर,
जवाब हम लेके क्या करेंगे ॥
कहा यः क़ासिदने जाके उससे,
कि तेरा आशिक़ इज़ाब में है ।
वः शोख़ शोख़ीसे तब यः बोला,
सबाब हम लेके क्या करेंगे ॥
हमारे दिल-बर को बे-हिजाबी,
सिखाई साक़ी ने मै पिलाकर ।
वः बे-तकल्लुफ़ यः कह रहा है,
नक़ाब हम लेके क्या करेंगे ॥
ख़बर जो होती-यः इब्तिदासे,
कि यों जवानी तमाम होगी ।
तो रोके कहते यही ख़ुदा से,
जवाब हम लेके क्या करेंगे ॥ २२० ॥

वज़न (१३)

"फ़ऊलुन फ़ऊलुन् फ़ऊलुन् फ़ऊलुन्"

"फ़ऊलुन् फ़ऊलुन् फ़ऊलुन् फ़ऊलुन्"

ग़ज़ल सफ़दर ।

(रागदेश ताल कव्वाली)

हुए दामो-क़फ़स म असीर जो हम,
तो ज़रा हमैं लुत्फ़े-चमन न रहा ।
करैं किससे बयान कशाकशे-ग़म,
कि सफ़रमें ख़याले-वतन न रहा ॥
तेरा चेहरा है गुल तेरा गुंचा दहन,
तेरा सीना समन तेरा सेबे-ज़क़न ।
तेरी शक्ल यः जबसे पडी है नज़र,
हमैं ज़ौके-बहारे-चमन न रहा ॥
न वः दांत गौहर न अक़ीक़ वः लब,
न वःआइना-रुख़ न वः मुश्कसे मू ।
वः अदन न रहा वः यमन न रहा,
वःहलब न रहा वः तन न रहा ॥

ख़बर अपनी नहीं है हुज़ूरको कुछ,
गए चाहनेवाले अयाँ हुआ ख़त।
कोई बस्तए-ज़ुल्फ़े-दुताँ न रहा,
कोई कै़दिए-चाहे-ज़क़न न रहा॥
थे जवांतो बदन में थी ताबो-तवाँ,
जो शबाब गया तो वः लुत्फ़ गया।
वः जवाँ न रही वः बयाँ न रहा,
वःदहन न रहा वः सख़ुन न रहा॥
न शराब में है कोई ज़ायक़ा अब,
न कबाब में है कोई ज़ायका अब।
वः फ़िज़ा न रही वः हवा न रही,
वः मज़ा न रहा वः चमन न रहा॥
जो ज़बान से दावए-इश्क़ किया,
रहे **सफ़दर** अब इस्का ख़याल ज़रा।
कोई यह न कहे कि यः मर न मिटा,
इसे पासो-लिहाज़े सख़ुन न रहा॥२२१॥

ग़ज़ल आग़ा।

बुते-ग़ुंचा-दहन पै निसार हूं मैं,
नहीं झूंठ कुछ इस्में ख़ुदाकी क़सम।
मेरा तायरे-दिल इसी क़ैदमें है,
मुझे ज़ुल्फ़के दामे-बलाकी क़सम।
नहीं भाता मुझे कोई रश्के-परी,
कोई लाख हसीं हो बलासे मेरी।
मेरा दिल तेरा आशिक़े शेफ़्ता है,
मुझे गेरेही नाज़ो-अदाकी-क़सम॥
न तो हूरहीको यः मिलाहै-नमक,
न परीमें है ऐसी मलाहते-रुख़।
तेरे सामने फीके हैं शम्शो क़मर,
मुझे तेरेही रुख़की ज़ियाकी क़सम॥
मेरे बाद सहेगा न कोई यः ग़म,
न उठेगा किसीसे यः रंजो-अलम।
करो तर्क तुम आजसे ज़ुल्मो-सितम,

तुम्हैं अपनेही मेहरो-बफ़ाकी क़सम ।
कभी दर्दसे रोता हूं आग़ा अगर,
तो हँसीसे यः कहता है वह ग़ुले-तर ।
मेरा मान कहा अरे नाला न कर,
तुझे बुल्बुलेनग्मा-सराकी क़सम ॥२२२॥

गज़ल तजल्ली ।

तेरे जोरो-जफ़ासे ख़ुदाकी क़सम,
मुझे रंजो मलाल ज़रा भी नहीं ।
मगर अपनेही दिलमें तो सोचो सनम्,
कि सताना किसीका रवा भी नहीं ॥
मुझे क्या जो चमनहों हज़ारों हरे,
मुझे क्या जो चमनहों समरसे भरे ।
मेरा ग़ुंचए-दिल जो शिग़ुत्फ़ा करे,
वः नसीम नही वः सबाभी नहीं ॥
न वः होशे खिरद न वः ताबो-तवां,
न वःऐशो-तरबकाहै नामो-निशां ।

मुझे छोड़के हायगये वः कहां,
मैं अकेला कभी तो रहा भी नहीं ॥
कभी सरपै गिरे मेरे कोहो अलम,
कभी यार सितमसे कमर हुई ख़म॥
कहां दिल यः मेरा कहां सदमएग़म,
मेरे हिस्सेमें हाय क़ज़ा भी नहीं ॥
मुझे देखा जो दामे-बलामें फँसा,
तो वः गेसुओंवाला यः कहेनेलगा ।
कि तजल्लिए खस्ता जिगरके सिवा,
कोईमूरिदे-रंजो-बला भी नहीं ॥ २२३ ॥

गज़ल बरहमन ।

"मुखम्मस"

अर्थात् दोहा मिली हुई ।

तुम्हारीहीख़ुशीसे ख़ुशहैं यां अपनी रज़ा क्याहै।
दिलो जां लीजिये इसमें हमैं उज्रो गिला क्याहै॥

दोहा ।

पोथी पढ़ि पढि जगमुआ, पण्डित हुआ न कोय।
ढाई अक्षर प्रेमके, पढै सो पण्डित होय ॥
जो उसको जानतेहैं जानना उनको रहा क्याहै॥

दोहा ।

नृपति सैन सम्पति सचिव, सुत कलत्र परिवार ।
करत सबनको स्वप्नसम, नमो काल करतार ॥
गुरूरे हश्मते दुनियायदूं पेशे कज़ा क्या है ॥

दोहा ।

भरित नेह नवनीर नित, बरसत सुरस अथोर ।
जयति अपूरब घन कोऊ, लखि नाचतमनमोर॥
करम उस अब्रेरहमतका न पूछो हमपैक्याक्याहै॥

दोहा ।

गंगा यमुना सरस्वती; सात समुद्र भरपूर ।
तुलसी चातकके मते, बिना स्वाति सब धूर ॥
जो तेरे हो चुके उनको किसीसे वास्ता क्याहै ॥

दोहा ।

जगत जनायो जिहि सकल, सो प्रभु जान्यो नाहिं।
ज्यों आँखिन सब देखिये, आंखि न देखी जाहिं॥
जो हो सा आइने दिल तब खुले नुरे खुदा क्या है॥

दोहा ।

सर सूखे पंछी उडे, औरै सरनि समाहिं ।
दीन मीन बिन पंखके, कहु रहीम कहँ जाहिं ॥
करम कर या नकर हमको ठिकाना दूसरा क्या है॥

दोहा ।

काहु न उतरत चढ़त जब, बढ़त मोद नित नित्त ।
अहो धन्य धनि प्रेममद, पियत हिउमगत चित्त॥
"बरहमन" कोई क्या जानै कि इसमे का मज़ा क्या है ॥ २२४ ॥

रुबाई अमीर चरखारवी ।

सच है मुझसा कोई हकीर नहीं ।
दामे-इसियांमें यों असीर नहीं ॥ २२५ ॥

आजिज़ाना यः कौल है अपना ।
जिस्में गुर्बत न हो अमीर नहीं ॥२२६॥

रुबाई सफ़दर ।

दुनिया फ़ानी है ज़िन्दगानी फ़ानी ।
यः साजे-तरब यः कामरानी फ़ानी ।
सफ़दर कभी फ़ाल भी जो देखी हमने ।
निकला कलमा यही कि फ़ानी फ़ानी ॥

रुबाई ।

दुनियाए दनीको जो फ़ानी समझे ।
क़िस्सह-उम्रको कहनी समझे ॥
दरियाए-हक़ीक़तको वही जाए तैर ।
जो मिस्ले-हुबाब ज़िन्दगानी समझे॥२२८॥

इति गज़ल संग्रह समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराजश्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.

क्रय्यपुस्तकें (संगीत-राग)

नाम	की. रु. आ
सूरसागर सूरदासजी कृत-सम्पूर्णबारहों स्कन्ध । सुन्दर जिल्दबँधी है	७-०
सूरसागर रफ़्कागज़का	६-०
भजनामृत-इसमें मंगल, गौरी, होली, जयध्वनि, पद, विनय, आरती इत्यादि अनेक प्रकारके भजन हैं साधुओंके वास्ते अतिउत्तम है....	१-०
ब्रजबिहार-वृन्दावनवासी श्रीनारायणस्वामीजी कृत-जिसमें श्रीकृष्णचन्द्र आनंदकंदवृन्दावनबिहारी तथा श्रीवृषभानुनंदिनी राधेमहारानीकी सम्पूर्ण लीलाओंकावर्णन सुंदर अनेक प्रकारके भजन दोहा कबित्त और बार्त्तिकमें अति मधुरतासे किया गयाहै	

जाहिरात ।

जिसके पढ़नेंसे श्रीकृष्णचरणानुरागि-
योंकामन प्रेममें एकदम मग्न होजाताहै
इसमें अधिकतर वही लीला सम्मि-
लित कीगई हैं कि, जिनको आजक-
लके रासधारीलोग करते हैं अंतमें
अनुरागरसभीहै जगह २ पर चित्रभी
सुन्दर लीलानुकूल लगाये गये हैं और
पुस्तककी रक्षाके निमित्त विलायती
कपडेकी सुंदर जिल्दभी बाँधी गई है
जिसपर सोनेके अक्षर लिखे हैं ... २-०

रत्नरासविलास-प्रथम भाग-इसमें श्री-
कृष्णजीकी अनेकप्रकारकी रासलीलाहैं ०-१२

गरत्नाकर भक्तचिंतामणि रागमाला
सहित जिसमें अतिचटकीले २००० पद हैं २-४